वन एवं प्राकृतिक वनस्पति

By Vijay Sihag Sir
7689007448

A. वन नीतियां देश में

1894 – प्रथम वननीति

1952 –स्वतंत्र भारत की प्रथम वन नीति।

1988 – नवीनतम वननीति

नोट :– राजस्थान राज्य की नवीनतम वन नीति – 18 फरवरी, 2010

– राजस्थान की ईको–ट्यूरिज्म पॉलिसी – 4 फरवरी, 2010

नवीनतम वननीति के अनुसार :

- भौगोलिक क्षेत्रफल के 33 %
- पर्वतीय के 60%
- मैदानी के 20%

B. **वन गणना**

- वन गणना का कार्य – वन सर्वेक्षण संस्थान" – देहरादून (उत्तराखंड)
- वन गणना प्रति दो वर्ष में एक बार होती है।
- नवीनतम वनगणना 2017 (15वीं वन गणना) के अनुसार –

  वन क्षेत्रफल कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का = 7.26% (24,838 वर्ग किमी.)

  प्रतिव्यक्ति वन क्षेत्र – 0.04 हैक्टेयर

नोटः– राजस्थान में अभिलेखित वन (recorded forest) - 9.57% (32,737 वर्ग किमी.)

वनों का सर्वाधिक विस्तार

क्षेत्रफल की दृष्टि से

1. उदयपुर – 2764 sq km
2. अलवर – 1197 sq km
3. प्रतापगढ़ – 1044 sq km
4. बांरा – 1013 sq km

प्रतिशत की दृष्टि से

1. उदयपुर – 23.58%
2. प्रतापगढ़ – 23.47 %
3. सिरोही – 17.80%
4. करौली – 15.75 %

By Vijay Sihag Sir
7689007448

वनों का सबसे कम विस्तार

क्षेत्रफल की दृष्टि से

1. चुरू – 82 sq km
2. हनुमानगढ़ – 90sq km
3. जोधपुर – 105sq km
4. गंगानगर – 113sq km

प्रतिशत की दृष्टि से

1. जोधपुर – 0.46%
2. चूरू – 0.59%
3. नागौर – 0.81%
4. जैसलमेर – 0.82%
4. बीकानेर – 0.82%

C. वनों का वर्गीकरण

I कानूनी /वैधानिक वर्गीकरण

II भौगोलिक वर्गीकरण

I कानूनी /वैधानिक वर्गीकरण : इस आधार पर वनों को तीन भागों में बांटा जाता है।

वैधानिक वन

आरक्षित वन (38%)
(Reserve Forest)
लकड़ी काटना
पशुचारण
आखेट पूर्ण प्रतिबंधित
सर्वाधिक – उदयपुर

रक्षित वन (56%)
(Protected Forest)
लकड़ी काटने
पशुचारण पर सीमित छूट
सर्वाधिक –बारां

अवर्गीकृत वन (6.0%)
(Unclassified Forest)
लकड़ी काटने, पशुचारण पर कोई प्रतिबंध नहीं
सर्वाधिक – बीकानेर

- वैधानिक नियंत्रण के लिए वनों को **12 वन मण्डलों** में बांटा गया है–
  "बीकानेर को छोड़कर 6 संभाग एवं बूंदी, झालावाड़, सिरोही, बांसवाड़ा चित्तौड़गढ़ टोंक।"

By Vijay Sihag Sir
7689007448

II वनों का भौगोलिक वर्गीकरण

	उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वनस्पति	उष्ण कटिबंधीय सागवान	उष्ण कटिबंधीय मानसूनी / पतझड़	उष्ण कटिबंधीय धोकड़ा वनस्पति	उष्ण कटिबंधीय मरुस्थलीय / कंटीली वनस्पति
क्षेत्र	1 प्रतिशत	7 प्रतिशत	28 प्रतिशत	58 प्रतिशत	6 प्रतिशत
वर्षा की मात्रा	150 सेमी	75–110 सेमी	50–80 सेमी	30–60 सेमी	0–30 सेमी
विस्तार	माउण्ट आबू	वागड़ (बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर), कोटा, झालावाड़	मेवाड़ (उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, भीलवाड़ा) मैदान– अलवर,भरतपुर, करौली, धौलपुर	अर्द्धशुष्क मरुस्थलीय जिले	शुष्क मरुस्थलीय जिले
वृक्ष	• डिकिल्पटेरा आबू ऐंसिस • जामुन • बांस	(Trick -GMT) • गुलर • महुआ • तेंदू • सागवान	• साल • सागवान • शीशम } 3स • आम, चंदन	• खेजड़ी • रोहिड़ा • कैर • बैर • बबूल	• नागफनी • आक • कंटीले वृक्ष

नोट –

- **राज्य में सर्वाधिक पाये जाने वाले वन – धोकड़ा**
- **धोकड़ा सर्वाधिक – करौली, सवाईमाधोपुर में मिलते हैं।**
- **सर्वाधिक आर्थिक महत्व के वन – मानसूनी**

प्रमुख वन सम्पदा –

1. खेजड़ी :– वैज्ञानिक नाम – प्रोसेपिस सिनेरेरिया

अन्य उपनाम –

- ◆ राज्य वृक्ष (1983)
- ◆ राज्य का गौरव
- ◆ शमी वृक्ष, राज्य कल्पवृक्ष
- ◆ जांटी

By Vijay Sihag Sir
7689007448

नोट –

- गोगाजी के थान खेजड़ी वृक्ष के नीचे होते है।
- विजयादशमी को खेजड़ी की पूजा होती है।

2. **रोहिड़ा** – वैज्ञानिक नाम – टिकोमेला अण्डूलेटा

उपनाम

- राज्य पुष्प (1983)
- राजस्थान का सांगवान

3 **महुआ** – वैज्ञानिक नाम – मधुका लोंगोफोलिया (सर्वाधिक – डूंगरपुर)

- इसे "आदिवासियों का कल्पवृक्ष" कहा जाता है।

4. **पलास/ढ़ाक/खाखरा** – वैज्ञानिक नाम – ब्यूटियो मोनोस्पर्मा

- सर्वाधिक – राजसमंद
- इसे "जंगल की ज्वाला"(Flame of the forest) कहा जाता है।

5. **डिकिल्पटेरा आबू ऐंसिस (अम्बरतरी)**

- यह एक औषधि वनस्पति है जो विश्व में केवल माउण्ट आबू में पायी जाती है।

6. **खैर** – सर्वाधिक – उदयपुर

- इसकी छाल से उदयपुर, चित्तौड़गढ़ में कथौड़ी जाति द्वारा "कत्था" बनाया जाता है।

7. **शहतूत** – सर्वाधिक – उदयपुर

- इस वृक्ष पर रेशम के कीट पाले जाते है जिससे रेशम प्राप्त होता है।

8. **तेंदू** – सर्वाधिक – प्रतापगढ़

- इसके पत्ते से बीड़ी बनाई जाती है।
- इसके पत्तों को –"टिमरू" कहा जाता है।

9. **जामुन** – सर्वाधिक –माउण्ट आबू

- मधुमेह रोग के लिए उपयोगी।

10. **प्रमुख घास** –

(a) बांस –सर्वाधिक – बांसवाड़ा।

- यह सबसे लम्बी घास है, इसे "आदिवासियों का हरा सोना" कहा जाता है।

(b) लोलण /सेवण घास – वैज्ञानिक नाम – लसियुकस सिडीकुस (सर्वाधिक – जैसलमेर)

- पश्चिम राजस्थान में सबसे लम्बी घास
- इसके क्षेत्र को **"लाठी सीरीज"** कहा जाता है।

(c) खस – भरतपुर, टोंक, सवाईमाधोपुर

- सुगंधित घास जिसे इत्र बनाने मे प्रयुक्त किया जाता है।

(d) बुर – यह बीकानेर क्षेत्र में पाई जाने वाली सुगंधित घास है।

(e) मोचिया घास – तालछापर अभयारण्य (चुरू) में पाई जाती है।

नोट :– गोंद का उत्पादन सर्वाधिक चौहट्टन क्षेत्र (बाड़मेर) से होता है।

By Vijay Sihag Sir
7689007448

वन संरक्षण पुरस्कार

1. अमृतादेवी विश्नाई पुरस्कार :–शुरूआत – 1994

उद्देश्य –

- वृक्षारोपण
- वन सुरक्षा
- वन्य जीव सुरक्षा

(उपर्युक्त तीनों) के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए

यह पुरस्कार दो स्तर पर दिया जाता है –

संस्थागत	**व्यक्तिगत**
वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति / पंचायत / ग्रामस्तरीय संस्था	
राशि– 1 लाख	राशि– 50 हजार
2014 – ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति सूरजगढ़ (उदयपुर)।	2014 – दारासिंह राणावत
2015 – जलधारा विकास संस्थान भीलवाड़ा।	2015 – सत्यनारायण जोशी।

2. वानिकी पण्डित पुरस्कार – वृक्षारोपण एवं वन विकास से संबंधित संस्था / व्यक्तिगत

3. वृक्षमित्र पुरस्कार /इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार

- यह पुरस्कार केन्द्र सरकार के द्वारा वृक्षारोपण एवं परती भूमि विकास के लिए दिया जाता है।
- राशि – 2,50,000रु.

4.राजीव गाँधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार

शुरूआत – 2012

दो स्तर पर

संस्थागत	व्यक्तिगत
5 लाख – रजतकमल	2 लाख –रजत कमल

5. कैलाश सांखला वन्य जीव पुरस्कार – 50 हजार

6. वनपालक पुरस्कार –' यह पुरस्कार वन विभाग में कार्यकरने वाले अधिकारी, वनपालको एवं अन्य कर्मचारियों को दिया जाता है।

वृक्षारोपण कार्यक्रम

By Vijay Sihag Sir
7689007448

1. राज्य वानिकी क्रियान्वयन योजना (State Forestry Action Plan)

- शुरूआत – 1996–2016 (बीस वर्षीय कार्यक्रम)

2. मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम –

- शुरूआत – 1978 में
- जिले – 10
- भागीदारी – केन्द्र : राज्य
  75 : 25

3. राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना –

- सहयोग – JICA (Japan international corporation agency)
- शुरूआत – 2003

उद्देश्य:– 1. वानिकी व जैव विविधता को बढ़ाना।
2. गरीबी उन्मूलन करना।
3. भू–जल संरक्षण।

चरण

फेज I	फेज II
2003–2010	2011–2019
18 जिले	15 जिले (10 मरु, 5 गैर मरु)

4. हरित राजस्थान योजना – 2009 :–

- यह एक पंचवर्षीय योजना थी
- अवधि – 2009 – 2014

5. वन धन योजना :– (12 अगस्त, 2015) वन क्षेत्र के निकट रहने वाले लोगों के विकास एवं उनकी वनों पर निर्भरता को कम करने व रोजगार उपलब्ध करवाने व वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए शुरू की गई योजना। इस योजना में शामिल – माउण्टआबू, कुम्भलगढ़ वन्य जीव अभयारण्य, जवाई, रणथम्भौर टाइगर रिजर्व, राष्ट्रीय मरू उद्यान। (Trick : माँ कुम्भा जवाईं रण में मरा)

वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी कानून/अधिनियम

1. वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम – 1972
2. बाघ संरक्षण अधिनियम – 1973
3. क्रोकोडाइल (मगरमच्छ) संरक्षण अधिनियम – 1975
4. वन संरक्षण अधिनियम – 1980
5. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम – 1986

6. हाथी संरक्षण अधिनियम — 1992
7. जैव–विविधता संरक्षण अधिनियम — 2002
8. डॉल्फिन संरक्षण अधिनियम — 2009

नोट– 1. डॉल्फिन को **राष्ट्रीय जलीय जीव 2010** में घोषित किया गया।
2. राजस्थान राज्य जैव–विविधता बोर्ड – 14 सितम्बर, 2010

प्रमुख वन एवं पर्यावरण दिवस

- 14 जनवरी से 31 जनवरी - जीव-जन्तु पखवाड़ा
- 22 मार्च - जल दिवस
- 22 अप्रेल - पृथ्वी दिवस
- 22 मई - जैवविविधता दिवस
- 5 जून - विश्व पर्यावरण दिवस
- 1 जुलाई से 7 जुलाई - वन महोत्सव एवं वन सप्ताह
- 16 सितम्बर - ओजोन दिवस
- 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर - वन्य जीव सप्ताह

वनों से सम्बन्धित प्रमुख संस्थान

- काजरी (CAZRI - Central Arid Zone Research Institute) : स्थापना - 1952, जोधपुर
- आफरी (AFRI - Arid Forest Reserch Institute) : स्थापना - 1988, जोधपुर

राजस्थान के प्रमुख बायोलॉजिकल पार्क - 5

1. सज्जनगढ़ (उदयपुर)
2. माचिया सफारी (जोधपुर)
3. नाहरगढ़ (जयपुर)
4. अभेडा (कोटा–नांता)
5. मरुधरा (बीकानेर–बीछवाल)

राजस्थान के प्रमुख प्रस्तावित पार्क

- प्रकृति पार्क (Nature Park) - चूरू
- केक्टस गार्डन - कुलधरा (जैसलमेर)
- बटरफलाई वैली व बोगनवेलिया पार्क – जयपुर

By Vijay Sihag Sir
7689007448

वन्य जीव जन्तु एवं उनका संरक्षण

राजस्थान वन्य जीवों कि दृष्टि से देश का महत्वपूर्ण राज्य माना जाता है, असम राज्य के बाद वन्य जीवों में राजस्थान का दूसरा स्थान है। स्वतन्त्रता पूर्व राजस्थान की रियासतों को **'शिकारियों के स्वर्ग'** के नाम से जाना जाता है। स्वतन्त्रता के बाद अनियन्त्रित वृक्षों की कटाई एवं निष्प्रयोजित शिकार के फलस्वरूप काफी हानि पहुँची। राज्य एवं केन्द्र सरकार इनके संरक्षण के लिए संयुक्त रूप से प्रयासरत है –

वन्य जीवों के संरक्षण के उपाय

स्वःस्थाने (In Site)

"जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में संरक्षित करना।"

उपाय

- राष्ट्रीय उद्यान
- अभयारण्य
- बाघ संरक्षण परियोजना
- रामसर साइट
- कन्र्जेवेशन रिजर्व
- आखेट निषेध क्षेत्र
- जैव मंडल

बहिःस्थाने (Ex. site)

"जीवों को उनके प्राकृतिक आवास के बाहर संरक्षित करना।"

उपाय -

- जंतुआलय
- मृगउद्यान
- पशु जीन बैंक

I. राष्ट्रीय पार्क

	रणथम्भौर	**केवलादेव/घना पक्षी विहार**	**मुकंदर्रा हिल्स**
स्थापना –	1980	1981	9 जनवरी, 2012
विस्तार–	सवाई माधोपुर	भरतपुर	कोटा, चित्तौड़गढ़
क्षेत्रफल –	393 वर्ग किमी	29 वर्ग किमी	199 वर्ग किमी.
विशेष –	◆ त्रिनेत्र गणेश ◆ कुक्कर घाटी ◆ मछली बाघिन/T-16 (क्रोकोडाइल किलर) ◆ प्रथम बाघ परियोजना ◆ इसे **'बाघों का घर'** कहा जाता है। (Land of Tiger)	◆ यूनेस्को धरोहर सूची में शामिल राज्य की प्राकृतिक धरोहर (1985) ◆ डॉ. सालिम अली की कार्यस्थली ◆ साईबेरियन सारस ◆ राज्य का एकमात्र पक्षियों का संरक्षण स्थल ◆ रामसर साईट में शामिल राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान	◆ नवीनतम राष्ट्रीय उद्यान ◆ गागरोनी तोते (एलेक्जेन्ड्रिया पेराकीट) ◆ अबली मीणी का महल

II. राज्य अभयारण्य – 26

राज्य में सबसे

बड़ा अभयारण्य छोटा अभयारण्य

"राष्ट्रीय मरू उद्यान" (1980) — सरिस्का "अ" (2013)

क्षेत्रफल – 3162 वर्ग किमी. — क्षेत्रफल – 3 वर्ग किमी.

प्रमुख अभयारण्य –

1. सरिस्का अभयारण्य –

स्थापना – 1955

स्थान – अलवर

विशेष – इस अभयारण्य में RTDC होटल **टाइगर डेन** प्रसिद्ध है।

– 1978 में राजस्थान का दूसरा टाइगर प्रोजेक्ट चलाया गया।

– इस अभयारण्य में भर्तृहरि मंदिर, पांडुपोल मंदिर, नीलकंठ महादेव मंदिर स्थित है।

– इस अभयारप्य में हरे कबुतर एवं मोर की संख्या सर्वाधिक पायी जाती है।

– इस अभयारण्य में कांकण्वाड़ी का पठार, क्रासका का पठार स्थित है।

2. सरिस्का (अ) अभयारण्य –

स्थापना – अप्रैल, 2013

स्थान – अलवर

विशेष – राजस्थान का सबसे छोटा अभयारण्य (3 वर्गकिमी.)

3. तालछापर अभयारण्य –

स्थापना – 1971

स्थान – चूरू

विशेष – काले हिरणों के लिए प्रसिद्ध है।

– इस अभयारण्य में कुरजां पक्षी (डेमोजाइल क्रेन) भी पाया जाता है।

– इस अभयारण्य में **मोचिया** घास पाई जाती है, जो काले हिरणों द्वारा खायी जाती है।

– इस अभयारण्य में महाभारत काल में गुरू द्रोणाचार्य का आश्रम स्थित था।

4. राष्ट्रीय मरू उद्यान –

स्थापना – 1980

स्थान – जैसलमेर, बाड़मेर

विशेष – राजस्थान में क्षेत्रफल कि दृष्टि से सबसे बड़ा अभयारण्य है। (3162 वर्गकिमी.)

– इस अभयारण्य में **सेवण घास** सर्वाधिक पायी जाती है। जिसके क्षेत्र को **लाठी सीरीज** के नाम से जाना जाता है।

– इस अभयारण्य में गोडावण पक्षी (ग्रेट इण्डियन बस्टर्ड) एवं चिंकारा (गजेला–गजेला) पाये जाते है।

– इस अभयारण्य में **फॉसिल्स पार्क** स्थित है। जिसमें **जुरासिक काल** की लकड़ी के अवशेष पाये जाते है।

– इस अभयारण्य में **जीरोफाइट्स** (मरूद्भिद) वनस्पति पायी जाती है।

5. जमवारामगढ़ वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1982

स्थान – जयपुर

विशेष – यहां मुख्यतः धौंक के वन पाये जाते है।

6. नाहरगढ़ वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1980

स्थान – जयपुर

विशेष – इसे राजस्थान के जैविक उद्यान के रूप में विकसित किया गया है।

– यहां बियर रेस्क्यू सेंटर खोला गया है

– इसमें जयपुर जंतुआलय को स्थानांतरित किया गया

7. बंध बारेठ वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1985

स्थान – भरतपुर

विशेष – घना पक्षी विहार से पक्षी यहां आवास बनाने आते है, जिसके कारण इसे **'पक्षियों का घरौंदा'** कहा जाता है।

8. रामसागर वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1955

स्थान – धौलपुर

9. वन विहार वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1955

स्थान – धौलपुर

10. केसरबाग वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1955

स्थान – धौलपुर

विशेष – इसे धौलपुर के अंतिम राजा उदयभार सिंह ने बनाया।

– घना पक्षी के साइबेरियन क्रेन यहां भी जाये जाते है सांभर भी पाये जाते है यह N.H. 03 पर है।

By Vijay Sihag Sir
7689007448

11. कैलादेवी वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1983

स्थान – करौली एवं सवाई माधोपुर

विशेष – मुख्य रूप से यह धौंक वन क्षेत्र है।

12. राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य –

स्थापना – 1978

स्थान – उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान

विशेष – यह राजस्थान के 5 जिलों में विस्तृत है, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, बूंदी एवं कोटा में है।

– यह घडियालों, गांगेय सूस एवं उदबिलाव के लिए प्रसिद्ध है।

– यह जापानी पद्धति से स्थापित अभयारण्य है।

13. सवाई मानसिंह वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1984

स्थान – सवाई माधोपुर

14. रामगढ़ विषधारी वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1982

स्थान – बूंदी

विशेष – इस अभ्यारण्य को रणथम्भोर के बाघो का 'जच्चा घर' भी कहा जाता है। यहाँ धौक वृक्षों की प्रधानता हे।

– यहां पाईथन/अजगर पाये जाते है।

– मेज नदी इसी अभयारण्य से बहती है।

– यहां चन्दन एवं हल्दी के वृक्ष है।

– यहां दुगारी (कनक सागर) बांघ है।

15. जवाहर सागर वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1975

स्थान – बूंदी, कोटा, चित्तौड़गढ़

विशेष – घड़ियालों हेतु प्रसिद्ध है।

16. शेरगढ़ वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1981

स्थान – बांरा

विशेष – यह सांपो की शरण स्थली है।

– परवन नदी इस अभयारण्य से गुजरती है।

17. कुम्भलगढ़ वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1971

स्थान – उदयपुर, पाली एवं राजसमंद

विशेष – यह भेड़ियों हेतु प्रसिद्ध है।
– रणकपुर के जैन मन्दिर यहीं पर है।

18. सीतामाता वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1979
स्थान – चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ एवं उदयपुर
विशेष – यह चीतल की मातृभूमी, उडनगिलहरी एवं चौसिंगा हेतु प्रसिद्ध है।
– जाखम नदी एवं बांध इसी में स्थित है। करमोई, नालेसर नदियां भी बहती है।
– यहां सर्वाधिक जैव विविधता है।
– सागवान वनों का एकमात्र अभयारण्य यहीं है।
– देशभर में सर्वाधिक चौसिंगा यहीं पाये जाते है।

19. भैसरोड़गढ़ वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1983
स्थान – चित्तौड़गढ़
विशेष – यह घड़ियालों हेतु प्रसिद्ध है।
– यहां की प्रमुख विशेषता यह है कि इसका वन क्षेत्र चम्बल एवं ब्राह्मणी नदियों के साथ लम्बी पट्टी के रूप में विस्तृत है।

20. बस्सी वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1988
स्थान – चित्तौड़गढ़
विशेष – इसमें जालेश्वर महादेव का पौराणिक आस्था स्थल है।
– यह अभ्यारण्य जंगली बघेरो हेतु प्रसिद्ध है।

21. फुलवारी की नाल –

स्थापना – 1983
स्थान – कोटड़ा (उदयपुर)
विशेष – यहां से सोम, मानसी एवं वांकल नदियां निकलती है।
– स्थानीय व विदेशी पर्यटन के लिए प्रसिद्ध।

22. जयसमंद वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1955
स्थान – उदयपुर
विशेष – यह बघेरों हेतु प्रसिद्ध है।
– पर्यटन हेतु प्रसिद्ध है।

23. सज्जनगढ़ वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1987

स्थान – उदयपुर

विशेष – इसे जैविक उद्यान (बायोलॉजीकल पार्क) बनाया गया है।

24. टॉडगढ़ रावली वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1983

स्थान – अजमेर, पाली, राजसमंद

25. माउण्ट आबू वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1960

स्थान – सिरोही

विशेष – यह जंगली मुर्गों हेतु प्रसिद्ध है।

– यहां अम्बरतरी वनस्पति (डिकिल्पटेरा आबुएन्सिस) पायी जाती है जो पूरे विश्व में केवल यहीं मिलती है।

– यहां यूब्लेफेरिस छिपकली पायी जाती है जो अत्यन्त सुन्दर होती है।

26. दर्रा वन्य जीव अभयारण्य –

स्थापना – 1955

स्थान – कोटा और झालावाड़

विशेष – गागरोनी तोते पाये जाते है।

– इस अभयारण्य के 199 वर्ग किमी. क्षेत्रफल को मुकुन्दर्रा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान में परिवर्तित किया गया है

III. बाघ परियोजना – 3

	रणथम्भौर	**सरिस्का**	**मुकुंदर्रा हिल्स**
स्थापना	1974	1978	2013
जिले	सवाई माधोपुर	अलवर	कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़

IV. रामसर साइट/आर्द्र भूमि/नम भूमि :– वे आर्द्र भूमि जहां विशेष जीव एवं पक्षियों को संरक्षण मिलता है।

- राजस्थान में वर्तमान में **2 रामसर साईट** हैं– 1 केवलादेव 2. सांभर।
- दो रामसर साईट प्रस्तावित हैं – 1. मानसागर – जयपुर 2. चम्बल।

V. कन्र्जेवेशन रिजर्व – 11

कन्र्जेवेशन रिजर्व	स्थान
1. जोहड़बीड़ कन्र्जेवेशन रिजर्व	बीकानेर
2. जवाई बांध कन्र्जेवेशन रिजर्व	जालौर
3. बीड़ कन्र्जेवेशन रिजर्व	झुंझुंनू
4. बॉसियाल कन्र्जेवेशन रिजर्व	खेतड़ी – झुंझूनू
5. बिसलपुर कन्र्जेवेशन रिजर्व	टोंक
6. सुंधामाता कन्र्जेवेशन रिजर्व	जालौर–सिरोही
7. शाकम्भरी कन्र्जेवेशन रिजर्व	सीकर–झुंझूनूं
8. गोगेलाव कन्र्जेवेशन रिजर्व	नागौर
9. गुढा विश्नोई कन्र्जेवेशन रिजर्व	जोधपुर
10. रोटू कन्र्जेवेशन रिजर्व	नागौर
11 उम्मेदगंज पक्षी कन्र्जेवेशन रिजर्व	कोटा

VI. आखेट निषेध क्षेत्र – 33

- सर्वाधिक आखेट निषेध क्षेत्र जोधपुर – 7
- सबसे बड़ा आखेट निषेध क्षेत्र – **कोटसर सावंतसर**, चुरू–बीकानेर
- सबसे छोटा आखेट निषेध क्षेत्र – **कनकसागर,** बूंदी

अन्य आखेट निषेध क्षेत्र :–

1. जवाई बांध – पाली	2. रोटू – नागौर	3. गुढ़ा विश्नोई – जोधपुर
4. रामदेवरा – जैसलमेर	5. जोहड़ बीड़ – बीकानेर	6. देशनोक – बीकानेर

VII. जंतुआलय 5

1. उदयपुर 2. बीकानेर 3. जोधपुर (माचिया सफारी) 4. कोटा 5. नाहरगढ़ (जयपुर)

नोट :
- सबसे पहला जंतुआलय रामसिंह द्वितीय द्वारा, रामनिवास बाग, जयपुर में स्थापित किया गया।
- राज्य में वैश्विक स्तरीय जंतुआलय जयपुर नाहरगढ़ में 4 जून, 2016 को स्थापित किया गया। जहा जयपुर जंतुआलय को स्थांनतरित किया गया।
- घड़ियालों का प्रजनन केन्द्र जयपुर जंतुआलय में स्थित
- पक्षीशाला एवं गोडावण का प्रजनन केन्द्र जोधपुर जंतुआलय में स्थित।

VII. मृग उद्यान – 7

मृग उद्यान	स्थान
1. अशोक	जयपुर
2. संजय	जयपुर (शाहपुरा)
3. अमृतादेवी	जोधपुर
4. माचिया	जोधपुर
5. पुष्कर	अजमेर
6. सज्जनगढ	उदयपुर
7. दुर्ग	चित्तौड़गढ़

By Vijay Sihag Sir
7689007448

नोट - वन्य जीवों के संरक्षण के लिए प्रत्येक जिले का
एक वन्य जीव घोषित किया गया है जो निम्नलिखित हैं-

अजमेर	- खड़मोर	जालौर	- भालू
अलवर	- सांभर	झालावाड़	- गागरोनी तोता
बांसवाड़ा	- जल पीपी	झुंझुनूं	- काला तीतर
बारां	- मगरमच्छ	जोधपुर	- कुरंजा
बाड़मेर	- लौंकी/मरु लोमड़ी	करौली	- घड़ियाल
भीलवाड़ा	- मोर	कोटा	- उदबिलाव
बीकानेर	- बटवड़ तीतर	नागौर	- राजहंस
बूंदी	- सुर्खाब	पाली	- तेंदुआ
चित्तौड़गढ़	- चौसिंगा	प्रतापगढ़	- उड़न गिलहरी
चुरू	- काले हिरण/कृष्ण मृग	राजसमन्द	- भेड़िया
दौसा	- खरगोश	सवाई माधोपुर	- बाघ
धौलपुर	- पचीरा /इण्डियन स्क्रीमर	श्रीगंगानगर	- चिंकारा
डूंगरपुर	- जांघिल	सीकर	- शाहिन
हनुमानगढ़	- छोटा किलकिला	सिरोही	- जंगली मुर्गी
जैसलमेर	- गोडावण	टोंक	- हंस
		उदयपुर	- कब्र बिज्जू
		जयपुर	- चीतल
		भरतपुर	- सारस

प्रमुख वन्य जीव :-

1. **चिंकारा** –
   – चिंकारा को 1981 में राज्य पशु घोषित किया गया।
   – इसका वैज्ञानिक नाम **'गजेला–गजेला'** है।
   – राजस्थान में **'एन्टीलोप'** प्रजाति का चिंकारा पाया जाता है।
   – चिंकारा के लिए नाहरगढ़ अभयारण्य व मरू अभयारण्य प्रसिद्ध है।
2. **गोड़ावण** –
   - गोड़ावण को 1981 में राज्य पक्षी घोषित किया गया।
   - इसका वैज्ञानिक नाम 'Ardeotis nigriceps' है।
   - इसे 'ग्रेट इंडियन बस्टर्ड' व सोन चिड़िया कहा जाता है।
   - गोड़ावण का प्रजनन केन्द्र जोधपुर जन्तुआलय (Zoo) में है।
   - राष्ट्रीय मरू उद्यान में यह पक्षी सर्वाधिक पाया जाता है।
   - राजस्थान में यह संकट कालीन प्रजाति में शामिल है। इसके संरक्षण के लिए राज्य सरकार द्वारा गोड़ावण संरक्षण अधिनियम 2014 पारित किया गया।
3. **गागरोनी तोता** –
   - इसका वैज्ञानिक नाम **'एलेक्जेन्ड्रिया पेराकीट'** है।
   - इसे हिरामन तोता भी कहा जाता है।
   - यह मुकुन्दर्रा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान में सर्वाधिक पाया जाता है।
   - यह मानव आवाज की हूबहू नकल करने वाला पक्षी माना जाता है।

नोट : कैलाश सांखला -
- प्रसिद्ध वन्य जीव प्रेमी जिनका जन्म जोधपुर में हुआ। बाघों के संरक्षण के प्रयास के कारण इन्हें **टाइगर मैन ऑफ इंडिया** के नाम से जाना जाता है।
- 1972 में इन्हें **पद्मश्री** व 2013 में **राजस्थान रत्न** से सम्मानित किया गया।
- इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ (Books) 'द टाइगर' और 'द रिटर्न ऑफ टाइगर' है।

By Vijay Sihag Sir
7689007448

जैव विविधता

- जीव जन्तुओं में पायी जाने वाली विभिन्नता तथा पारिस्थितिकी जटिलता ही जैव विविधता कहलाती है।
- जैव विविधता (Biodiversity) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम – एडवर्ड ओ. विल्सन द्वारा किया गया।
- जैव विविधता की दृष्टि से राजस्थान को **चार "पारिस्थितिक तंत्रों में विभक्त** किया जाता है –

1. **मरू पारिस्थितिकी तंत्र** : इस पारिस्थिकी क्षेत्र में **जीरोफाइट्स वनस्पति** एवं चिंकारा, काला हिरण, मरू लोमड़ी, भेड़िया, खरगोश, नेवला आदि मुख्यत: पाये जाते है –
2. **अरावली पर्वत पारिस्थितिक तंत्र** : जैव विविधता की दृष्टि से राजस्थान का सर्वाधिक समृद्ध क्षेत्र।
   – इस क्षेत्र में धौंक, केर, आम, महुआ, सालर वृक्ष एवं बघेरा, भालू, जरख, चौसिंगा, काला हिरण, चीतल वन्य जीव पाये जाते है।
3. **पूर्वी मैदानी पारिस्थितिक तंत्र** : अरावली के पूर्व में स्थित, इस क्षेत्र में पक्षियों की संख्या सर्वाधिक पाई जाती हैं। युनेस्को सूची में शामिल 'घना पक्षी विहार' इस क्षेत्र में स्थित है।
4. **दक्षिणी पूर्वी पारिस्थितिक तंत्र** : राजस्थान का हाड़ौती एवं विध्यांचल क्षेत्र इसमें शामिल है, इस क्षेत्र में जलीय जैवविविधता सर्वाधिक पायी जाती है।
   जलीय जीवों में – मगरमच्छ, घड़ियाल, कछुए, डॉल्फिन व अन्य मछलियां।

जैव विविधता संरक्षण :– जीव एवं वनस्पति संरक्षण दो प्रकार से किया जाता है –

1. **स्व:स्थाने संरक्षण (In-Situ Conservation) :-**
   संकट कालीन प्रजाति को उनके प्राकृतिक आवास में संरक्षण प्रदान करना।

– जैव मण्डल रिजर्व (Biosphere reserve)
– राष्ट्रीय उद्यान (National Parks)
– वन्य जीव अभयारण्य (wildlife Sanctuary)
– संरक्षण रिजर्व (Conservation Reserve)
– रामसर साईट

2. **बहि:स्थाने संरक्षण (Ex-Situ Conservation) :-**
   इस विधि में संकटग्रस्त पादप व जन्तु प्रजातियों को उनके प्राकृतिक आवास से बाहर कृत्रिम आवास में संरक्षण प्रदान किया जाता है।

– बॉटेनिकल उद्यान (Botanical Gardens)
– बीज बैंक (Seed Banks)
– टिश्यु कल्चर लैब (Tissue culture labs)
– चिड़िया घर (Zoo)
– एक्वेरियम (Aquariums)
– जीन बैंक (Gene Bank)

By Vijay Sihag Sir
7689007448

जैव विविधता संरक्षण के प्रयास :–

1. राजस्थान स्तर पर : 14 सितम्बर, 2010 को 'राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड' की स्थापना की गई।

– राजस्थान में जैव विविधता विरासत स्थल के रूप में चयनित स्थल – आंकल – वुड फॉसिल पार्क (जैसलमेर), नाग पहाड़ (अजमेर) एवं छापोली मंसामाता (झुंझुनूं)

– राजस्थान में जैव विविधता पार्क – 'गमधर वनक्षेत्र' (उदयपुर)

2. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर :

i. IUCN (International Union for Conservation of Nature)

गठन – 1948

उद्देश्य – जैव विविधता में होने वाली कमी को दर्शाना एवं उसे रोकने के लिए प्रयास करना।

ii. रेड डाटा बुक :

– इसे IUCN द्वारा जारी किया जाता है (प्रथम – 1972)

– संकटग्रस्त प्रजातियों को दर्शाना (Endangered Species)

– प्रतीक चिह्न – लाल पांडा

iii. CITES : (Conservation on international Trade in Endangered Species)

IUCN द्वारा 1973 में आयोजित सम्मेलन में संकटग्रस्त प्रजातियों के अंतराष्ट्रीय व्यापार पर नियंत्रण लगाने से सम्बंधि सहमति।

जैव विविधता सम्मेलन (CBD - The Convention on Biological Diversity)

– जैव विविधता सम्मेलन 1992 के रियो–डि–जिनेरियों सम्मेलन के दौरान अस्तित्व में आया।

– भारत में 'जैव विविधता संरक्षण अधिनियम' – 2002 में पारित किया गया।

– भारत में पर्यावरण, वन, जल, वायु एवं जैव विविधता को एक ही दायरे में लाने के उद्देश्य से 2010 में 'राष्ट्रीय ग्रीन ट्रिब्यूनल' (मुख्यालय–नई दिल्ली) का गठन हुआ।

जैव विविधता हॉट स्पोट्स –

– वे क्षेत्र जहां अधिक जैव विविधता होती है तथा जहां विलुप्ति की कगार पर पहुंचने वाली दुर्लभ प्रजातियों की अधिकता होती है, 'हॉट स्पॉट' कहलाते है।

– भारत में – बायोडाइवर्सिटी हॉट स्पॉट चार है –

1. पूर्वी हिमालय
2. पश्चिमी घाट
3. इंडो – बर्मा
4. सुंडालैण्ड – भारत का निकोबार क्षेत्र शामिल

– जैव विविधता दिवस 22 मई

– वर्ष 2010–2020 तक को U.N.O. द्वारा जैव विविधता दशक घोषित किया है।

जनसंख्या

- **जनगणना इतिहास**
  - प्राचीनकाल – अर्थशास्त्र – चाणक्य (मौर्यकाल)
  - मध्यकाल – आइने अकबरी –अबुल फजल (मुगलकाल)
  - आधुनिक काल – 1872 – लार्ड मेयो द्वारा

नोट :–

- 1881 लार्ड रिपन के काल में व्यवस्थित एवं दशकीय जनगणना की शुरूआत
- जनगणना – संघसूची का विषय है। भारतीय संविधान की 7वीं अनुसूची में है।
- 1948 जनगणना अधिनियम बनाया गया।
- 1993 में राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग का गठन
- जनगणना गृह मंत्रालय द्वारा करवायी जाती है।

नवीनतम जनसंख्या 2011

2011 की जनगणना

- क्रमानुसार – 15वीं
- व्यवस्थित – 14 वीं
- स्वतंत्रता के बाद – 7वीं
- 21वीं शताब्दी की – दूसरी

- 15वीं जनगणना का बजट – 2200 करोड़ रू.
- प्रति व्यक्ति खर्चा – 18.19 रू.
- 2011 की जनगणना में शामिल कुल जिले – 640 (वर्तमान में जिले –714)
- जनगणना शुभंकर – प्रगणक शिक्षिका (lady Enumerator)
- जनगणना आदर्श वाक्य – "हमारी जनगणना हमारा भविष्य"

जनगणना 2011 के विशेष बिन्दु :–

- NPR (National Population Register)" राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर" पहली बार बनाया गया है।
- प्रथम बार घरों की गणना।
- किन्नरों की गणना प्रथम बार (पुरूषों में गणना)
- जातीय जनगणना – दूसरी बार – 2011 (प्रथम बार– 1931)
- जनगणना 2011 दो चरणों में पूर्ण हुई –

  प्रथम चरण – 15 मई – 30 जून 2010

  द्वितीय चरण – 9 फरवरी – 28 फरवरी 2011

राजस्थान में जनसंख्या :–

जनसंख्या 6.85 करोड़

सर्वाधिक

1. जयपुर
2. जोधपुर
3. अलवर
4. नागौर

सबसे कम

1. जैसलमेर
2. प्रतापगढ़
3. सिरोही
4. बूंदी

नोट :– राजस्थान में देश की कुल जनसंख्या का **5.67 %** एवं विश्व की जनसंख्या का लगभग **1 %** हिस्सा है।

- जनसंख्या की दृष्टि से राज्य का देश में **आठवां स्थान** है।
- राज्य की दशकीय जनसंख्या में बढ़ोतरी **1.20 करोड़** हुई।
- 2011 में कुल जनसंख्या में सर्वाधिक बढ़ोतरी जयपुर में हुई।
- शिशु जनसंख्या (0–6 वर्ष) कुल जनसंख्या की = **15.54 %**
- कुल जनसंख्या में पुरूष जनसंख्या **51.86 %** एवं महिला जनसंख्या **48.14 %**

दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर

दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 21.30%

सर्वाधिक

1. बीकानेर(41.42%)
2. बाडमेर (32.5%)
3. जैसलमेर
4. जोधपुर

सबसे कम

1. श्रीगंगानगर (10%)
2. झुंझुंनू
3. पाली
4. बूंदी

नोट :– राजस्थान की जनसंख्या दर में सर्वाधिक ऋणात्मक बढ़ोतरी वाला दशक 1911–21 (–6.29%)

- राजस्थान की **जनसंख्या वृद्धि दर** में सर्वाधिक बढ़ोतरी वाला दशक 1971–81 (32.97%)
- राजस्थान की कुल जनसंख्या में **सर्वाधिक बढ़ोतरी** वाला दशक 1991–2001 (125 लाख की बढ़ोतरी)
- राजस्थान में 1901–2011 तक राज्य की कुल जनसंख्या में **566%** कि वृद्धि हुई, जो की 1901 की जनसंख्या (1.029 करोड़) का 6.66 गुणा है।

जनसंख्या घनत्व :–

जनसंख्या घनत्व 200

सर्वाधिक

1. जयपुर (595)
2. भरतपुर (503)
3. दौसा (476) 4. अलवर (438)

सबसे कम

1. जैसलमेर (17)
2. बीकानेर (78)
3. बाड़मेर (92)

नोट :– 100 से कम जनसंख्या घनत्व वाले जिले – जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर।

- मरूस्थलीय जिलों (पश्चिमी राजस्थान) का जनसंख्या घनत्व सबसे कम है।
- सिरोही (202), टोंक (198), का जन घनत्व लगभग राजस्थान के कुल जनघनत्व के बराबर है।

लिंगानुपात :–

लिंगानुपात 928

सर्वाधिक

1. डूंगरपुर 994
2. राजसमंद 990
3. पाली 987
4. प्रतापगढ़ 983

सबसे कम

1. धौलपुर 846
2. जैसलमेर
3. करौली
4. भरतपुर

शिशु लिंगानुपात 888

सर्वाधिक

1. बांसवाड़ा 934
2. प्रतापगढ़ 933
3. भीलवाड़ा 924

सबसे कम

1. झुंझुनूं 837
2. सीकर 848
3. करौली 852

नोट : राजस्थान में सभी जिलों का लिंगानुपात 1000 से कम है।

- राजस्थान का औसत लिंगानुपात **(928)** देश के औसत लिंगानुपात **(943)** से कम है।
- राजस्थान के पाली जिले का ग्रामीण लिंगानुपात **1003** है जो 1000 से ऊपर एक मात्र जिला है।
- राजस्थान के टोंक जिले का शहरी लिंगानुपात 985 है जो शहरी लिंगानुपात में सर्वाधिक है।

साक्षरता:–7 वर्ष या अधिक आयु का व्यक्ति जिसे अक्षर ज्ञान हो।

साक्षरता दर 66.1 %

सर्वाधिक

1. कोटा 76.6 %
2. जयपुर
3. झुंझुनू
4. सीकर

सबसे कम

1. जालौर 54.9 %
2. सिरोही
3. प्रतापगढ़
4. बांसवाड़ा

पुरूष साक्षरता :–

पुरूष साक्षरता दर 79.2 %

सर्वाधिक	सबसे कम
1. झुंझुंनू	1. प्रतापगढ़
2. कोटा	2. बांसवाड़ा
3. जयपुर	3. सिरोही
	4. जालौर

महिला साक्षरता :–

महिला साक्षरता दर 52.1 %

सर्वाधिक	सबसे कम
1. कोटा (66.11%)	1. जालौर (38.5%)
2. जयपुर	2. सिरोही, जैसलमेर
3. झुंझुंनू	3. बाड़मेर

नोट :– ♦ साक्षरता दर बाड़मेर, चुरू में कम हुई है, शेष सभी जिलों में बढ़ी है।

♦ करौली की साक्षरता दर (66.2) लगभग राजस्थान की साक्षरता दर के बराबर है।

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या :–

	ग्रामीण जनसंख्या	**शहरी जनसंख्या**
कुल जनसंख्या	5.15 करोड़	1.70 करोड
प्रतिशत	75.1 प्रतिशत	24.9 प्रतिशत
सर्वाधिक जनसंख्या	जयपुर	जयपुर
प्रतिशत	डूंगरपुर	कोटा
न्यूनतम जनसंख्या	जैसलमेर	प्रतापगढ़
प्रतिशत	कोटा	डूंगरपुर
लिंगानुपात	933	914

राजस्थान में अनुसूचित जाति एवं जनजाति

राजस्थान की कुल जनसंख्या में :–

	अनुसूचित जाति (SC)	जनजाति (ST)
◆ प्रतिशत –	17.8	13.5
◆ संख्या –	122.21 लाख	92.38 लाख
◆ सर्वाधिक संख्या –	जयपुर	उदयपुर
◆ प्रतिशत में सर्वाधिक –	श्रीगंगानगर	बांसवाड़ा
◆ सबसे कम संख्या –	डूंगरपुर	बीकानेर
◆ प्रतिशत में न्यूनतम –	डूंगरपुर	नागौर, बीकानेर
◆ लिंगानुपात –	923	948

राजस्थान में धार्मिक जनसंख्या

धर्म	वर्ष 2011	स्थान (सर्वाधिक)
हिन्दू	88.5	जयपुर
मुस्लिम	9.1	जयपुर
सिख	1.3	श्रीगंगानगर
जैन	0.9	जयपुर
ईसाई	0.1	बांसवाड़ा

भारत की कुल जनसंख्या

2011 की जनगणना के अनुसार

कुल जनसंख्या – 121.085 करोड़

- **सर्वाधिक**
  - **राज्य**
    1. उत्तर प्रदेश
    2. महाराष्ट्र
    3. बिहार
    4. पश्चिम बंगाल
  - **केन्द्र शासित प्रदेश**
    1. दिल्ली
    2. पुड्डुच्चेरी
    3. चण्डीगढ़
    4. अण्डमान निकोबार
- **सबसे कम**
  - **राज्य**
    1. सिक्किम
    2. मिजोरम
    3. अरूणाचल प्रदेश
    4. गोवा
  - **केन्द्र शासित प्रदेश**
    1. लक्ष्यद्वीप
    2. दमन एवं दीव
    3. दादरा नगर हवेली

नोट :–

- देश का जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में स्थान द्वितीय
- विश्व की कुल जनसंख्या में भारत की भागीदारी 17.50 प्रतिशत
- कुल जनसंख्या बढ़ोतरी 18.22 करोड़
- कुल जनसंख्या में 0–6 वर्ष के बच्चों की संख्या 16.45 करोड़

दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर

दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 17.70% (2001–2011)

- **सर्वाधिक**
  1. मेघालय 27.9 %
  2. अरूणाचल प्रदेश
  3. बिहार
- **सबसे कम**
  1. नगालैण्ड –0.6 %
  2. केरल 4.9 %
  3. गोवा

नोट :– सबसे कम जनसंख्या वृद्धिदर वाला दशक 1911–1921

- 1911–1921 के दशक को ऋणात्मक वृद्धि दर का दशक या **महान विभाजन दशक** कहा जाता है।
- 1921 में ऋणात्मक वृद्धिदर – 0.31 %
- 1951 – 1981 के दशकों को **जनसंख्या विस्फोटक दशक** कहा जाता है।
- 1971 घनात्मक वृद्धि दर 24.80 %
- 1971 के दशक के बाद जनसंख्या वृद्धि दर लगातार कम हुई है।
- **केरल** को स्थिर जनसंख्या वृद्धि दर वाला राज्य घोषित किया गया है।

जनसंख्या घनत्व :–

जनसंख्या घनत्व 382 (2001 में 325)

सर्वाधिक

1. बिहार (1106)
2. पश्चिम बंगाल (1028)
3. केरल (860)
4. उत्तर प्रदेश (829)

सबसे कम

1. अरूणाचल प्रदेश – 17
2. मिजोरम –52
3. सिक्किम –86
4. मणिपुर – 115

नोट :–

- केन्द्र शासित प्रदेशों में सर्वाधिक – दिल्ली (11320)
- केन्द्र शासित प्रदेशों में सबसे कम – अण्डमान एवं निकोबार (46)
- उत्तर के विशाल मैदानों में जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक पाया जाता है।
- पूर्वी भारत में जनसंख्या घनत्व सबसे कम है।

लिंगानुपातः–

लिंगानुपात – 943
(2001 में 933)

सर्वाधिक

1. केरल – 1084
2. पुडुचेरी – 1037

सबसे कम

1. दमन दीव – 618
2. हरियाणा – 879

शिशु लिंगानुपात
0 – 6 वर्ष का लिंगानुपात 919 (2001 में 927)

सर्वाधिक

1. अरूणाचल प्रदेश – 972
2. मिजोरम
3. मेघालय

सबसे कम

1. हरियाणा – 834
2. पंजाब
3 जम्मू कश्मीर

नोट :– 2001–2011 में लिंगानुपात में 10 अंकों की बढ़ोतरी हुई।

- जबकि शिशु लिंगानुपात में 8 अंकों की कमी।
- केन्द्रशासित प्रदेशों में सर्वाधिक शिशु लिंगानुपात – पुडुच्चेरी
- केन्द्र शासित प्रदेशों में सबसे कम लिंगानुपात – दमन एवं दीव

साक्षरता

" 7 वर्ष या अधिक आयु वाला व्यक्ति जिसे अक्षर ज्ञान हो साक्षर कहलाता हो। (1981 से) "

नोट :– 1981 से पहले साक्षरता की आयु 5 वर्ष

कुल साक्षरता – 74.04%
(2001 में 64.84 %)

- **सर्वाधिक**
  1. केरल – 93.91%
  2. लक्षद्वीप
  3. मिजोरम
  4. त्रिपुरा
- **सबसे कम**
  1. बिहार – 63.82 %
  2. अरूणाचल प्रदेश
  3. राजस्थान

नोट :– साक्षरता दर केन्द्र शासित प्रदेशों में सर्वाधिक लक्षद्वीप (92.28%)

- ♦ साक्षरता दर केन्द्रशासित प्रदेशों में सबसे कम दादरा नागर हवेली (76.2%)

पुरूष साक्षरता
82.14 %

- **सर्वाधिक**: 1. लक्षद्वीप 2. केरल
- **सबसे कम**: बिहार

महिला साक्षरता
65.46 %

- **सर्वाधिक**: केरल
- **सबसे कम**: बिहार

नोट :–

- ♦ साक्षरता दर में सर्वाधिक बढ़ोतरी – दादरा नागर हवेली
- ♦ महिला और पुरूष साक्षरता में सर्वाधिक अंतराल राजस्थान **(27.1%)** में सर्वाधिक है।
- ♦ सर्वाधिक साक्षरता बढ़ोतरी 1991–2001 के दशक में हुई (12.63%)

नगरीय जनसंख्या :–

नगरीय जनसंख्या 31.2 %

- **सर्वाधिक**
  - **राज्य**
    1. गोवा
    2. तमिलनाडु
  - **केन्द्र शासित प्रदेश**
    1. दिल्ली
    2. चण्डीगढ़
- **सबसे कम**
  - **राज्य**
    1. हिमाचल प्रदेश
    2. बिहार
    3. असम
  - **केन्द्र शासित प्रदेश**
    1. अण्डमान एवं निकोबार
    2. दादरा नागर हवेली

नोट :–
- ♦ ग्रामीण जनसंख्या **68.8 %**
- ♦ 2011 की जनगणना के अनुसार **मैट्रो सिटी** – 53
- ♦ 2011 की जनगणना के अनुसार **मैगा सिटी** – 8

- **मैट्रो सिटी** – जिन शहरों की जनसंख्या 10 लाख से अधिक हो।
- **मैगा (महानगर) सिटी** – जिन शहरों की जनसंख्या 50 लाख से अधिक हो।
- **प्रमुख महानगर** – प्रथम मुम्बई, द्वितीय दिल्ली, तृतीय कोलकाता, चतुर्थ चेन्नई।

अनुसूचित जाति :–

अनुसूचित जाति (SC) 16.6 %

- **सर्वाधिक**
  - संख्या में उत्तर प्रदेश
  - प्रतिशत में पंजाब
- **सबसे कम**
  - संख्या में मिजोरम
  - प्रतिशत में मिजोरम

अनुसूचित जनजातिः–

अनुसूचित जनजाति (ST) 8.6 %

- **सर्वाधिक**
  - संख्या में मध्य प्रदेश
  - प्रतिशत में मिजोरम
- **सबसे कम**
  - संख्या में पंजाब
  - प्रतिशत में पंजाब

- अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कुल जनसंख्या का 25.2 % है।

नोट :–

1. धार्मिक जनगणना के आंकड़े :–

1. हिन्दू 79.8 % 2. मुस्लिम 14.2 % 3. ईसाई 2.3 % 4. सिख 1.70 %

जनसंख्या नियंत्रण सम्बंधी कार्यक्रमः–

1. परिवार कल्याण कार्यक्रम – शुरूआत – 1951

- प्रारम्भ में यह "परिवार नियोजन कार्यक्रम के नाम से संचालित था।
- इसका उद्देश्य –

  जनसंख्या नियंत्रण
  शिशु मृत्यु दर नियंत्रण
  मातृ–मृत्यु नियंत्रण

2. मुख्यमंत्री बालिका सम्बल योजना :– शुरूआत 1 अप्रैल, 2007

उद्देश्य – लिंगानुपात में बढ़ोतरी करना

– 5 वर्ष तक की बालिका के नाम 10 हजार रूपये की राशि जमा कराई जायेगी जो उसे 18 वर्ष की उम्र में (76990 रू.) प्राप्त होगी।

3. राजीव गांधी जनसंख्या एवं स्वास्थ्य मिशन :– शुरूआत – 2009

4. ज्योति योजना : – शुरूआत 1 अप्रैल 2011

- महिलाओं को दो बालिकाओं पर नसबंदी करवाने पर रोल मॉडल के रूप में चयनित करना।

5. जननी शिशु सुरक्षा योजना :–

- शुरूआत – 12 सितम्बर, 2011
- इस योजना का उद्देश्य गर्भवती एवं 1 वर्ष तक के शिशुओं को निःशुल्क दवा एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाना है।

6.जननी एक्सप्रेस एम्बुलेंस सेवा

- शुरूआत – 2 अक्टूबर, 2012
- उद्देश्य – गर्भवती एवं बीमार नवजात शिशुओं को निःशुल्क वाहन सुविधा।

7. मुख्यमंत्री राजश्री योजना :–

- शुरूआत – 1 जून, 2016
- **उद्देश्य** – बालिका के जन्म पर अलग अलग समयावधि में कुल – 50000 रू. राशि का प्रावधान

8. बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं योजना –

- शुरूआत – 22 जनवरी, 2015
- इस योजना की शुरूआत पानीपत, हरियाणा से की गई।
- इस योजना में देश के सभी 714 जिले शामिल है।
- राजस्थान के सभी 33 जिले इस परियोजना में शामिल है।

नोट : – बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना के तहत राजस्थान में 9 जिलों में बालिका लिंगानुपात में बढ़ोतरी हुई है। इस कारण अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च, 2017) पर राजस्थान को **"राष्ट्रीय नारी शक्ति पुरस्कार–2016"** दिया गया।

9. लाडो रानी योजना –

- शुरूआत – 22 जुलाई, 2016
- यह योजना नागौर जिले से जिला कलेक्टर श्री राजन विशाल के प्रयासों से शुरू हुई।
- इस योजना को गरीब एवं प्रतिभावान **बालिकाओं की उच्च शिक्षा** को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया है।

10. जनसंख्या नीति

– देश कि नवीनतम जनसंख्या नीति 15 फरवरी 2000

उद्देश्य – **तत्कालिक** – स्वास्थ्य सुविधा एवं जनसंख्या नियंत्रण

मध्यकालीन – टीएफआर 2.1 प्राप्त करना ।

दीर्घकालीन – 2060 तक स्थिर जनसंख्या के लक्ष्य को प्राप्त करना।

जनसंख्या सम्बंधी अन्य महत्त्वूपर्ण बिन्दू :–

- **आस्था** – 11 मई, 2000 को भारत में जन्म लेने वाले 1 अरबवें शिशु का नाम
- 11 जुलाई – **विश्व जनसंख्या दिवस**
- 53 शहर देश में 10 लाख से अधिक जनसंख्या (मेट्रो सिटी) वाले हैं, जिनमें राजस्थान के **जयपुर** (10वां), **जोधपुर**(45वां) एवं **कोटा** (53वां) शामिल है।

	भारत	राजस्थान
♦ शिशु मृत्यु	34	41
♦ मातृ मृत्यु	167	244
♦ जीवन प्रत्याशा	68.3	67.9

कृषि

By Vijay Sihag Sir
7689007448

कृषि को **मानसून का जुआ** कहा जाता है।

- मैदानी भागों को कृषि का हृदय स्थल कहा जाता है, क्योंकि यह सर्वाधिक उपजाऊ होता है।
- अरावली क्षेत्र में राजस्थान में सबसे कम कृषि की जाती है।
- राजस्थान में कुल कृषि जलवायु प्रदेश – 10

कृषि का महत्त्व :–

1. रोजगार में योगदान

भारत	राजस्थान
54.6 %	62%

3. G.D.P. मे योगदान (2016–17)

स्थिर किमतों पर	चालू किमतों पर
25.29%	25.50%

2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में योगदान

आयात (Import)	निर्यात (Export)
1 खाद्य तेल	1. खाद्यान्न

कृषि के प्रकार

1. **मिश्रित कृषि** :– कृषि + पशुपालन
2. **खडीन कृषि** –प्लाया झीलों में पालीवाल ब्राह्मणों के द्वारा की जाने वाली कृषि। (सर्वाधिक – जैसलमेर)
3. **बरानी कृषि** – वर्षा आधारित या बिना सिंचाई की जाने वाली कृषि। (सर्वाधिक–बाड़मेर)
4. **मोनो कृषि** :– एक कृषि वर्ष में एक खेत में एक फसल का उत्पादन।
5. **ड्यूओ कल्चर** :– एक वर्ष में एक खेत में दो फसलों का उत्पादन।
6. **ओलिगो कल्चर** :– एक वर्ष में एक खेत में तीन फसलों का उत्पादन।
7. **रिले कृषि** :– जब एक कृषि वर्ष में 4 बार फसलों का उत्पादन। **(कृषि वर्ष 1 जुलाई से 30 जून)**
8. **स्थानांतरित कृषि** :–वनो को काटकर या जलाकर की जाने वाली कृषि को स्थानान्तरित कृषि कहा जाता है।

उपनाम – **1. पर्यावरण की दुश्मन 2. आदिवासियों की कृषि 3. कर्तन–दहन कृषि 4. वालरा कृषि** (राजस्थान में कहा जाता है)

नोट :–
- **चिमाता** – स्थानांतरित कृषि को पहाड़ी क्षेत्र में कहा जाता है।
- **दजिया** – स्थानांतरित कृषि को मैदानी भाग में कहा जाता है।
- राजस्थान में **वालरा** कृषि सर्वाधिक **भीलों** के द्वारा की जाती है।

स्थानान्तरित कृषि

सर्वाधिक

भारत	राजस्थान
पूर्वी भारत	दक्षिणी राजस्थान
1. नागालैण्ड / असम	1. उदयपुर

8. समोच्च रेखीय कृषि (Contour Agriculture)

पर्वतीय ढालों पर की जाने वाली कृषि समोच्च रेखीय कृषि कहलाती है।

9. शुष्क कृषि (Arid Agriculture)

75 सेमी. से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाने वाली कृषि।

10. ट्रक फार्मिंग :–

उपनगरों से एक रात में ट्रक के माध्यम से नगरों को जल्दी खराब होने वाले उत्पाद जैसे –**फल, फूल, सब्जी, दूध** उपलब्ध करवाना **ट्रक फार्मिंग** कहलाता है।

–:कृषि के वैज्ञानिक प्रकार :–

कृषि का नाम	सम्बंधित उत्पाद
1. सेरी कल्चर	रेशम कीट पालन
2. एपी कल्चर	मधुमक्खी पालन
3. विटी कल्चर	अंगूर की कृषि
4. वर्मी कल्चर	केंचूएं द्वारा उत्पादन
5. पोमोलॉजी	फलों का उत्पादन
6. हॉर्टी कल्चर	बागवानी कृषि
7. फ्लोरी कल्चर	फूलों का उत्पादन
8. पिसी कल्चर	मछली उत्पादन
9. ओलिवी कल्चर	जैतून की कृषि
10. सिल्वी कल्चर	वनों की खेती
11. ओलेरी कल्चर	सब्जी उत्पादन

By Vijay Sihag Sir
7689007448

कृषि फसलों का वर्गीकरण – 1. मौसम के आधार पर 2. उपयोग के आधार पर

कृषि फसलों का वर्गीकरण (मौसम के आधार पर)

खरीफ की फसल/स्यालू

बुआई–जून–जुलाई से सितम्बर–अक्टूबर
Short day Plant
फसल
1. बाजरा 2. मोठ, 3. ज्वार 4. ग्वार
5. तिल, 6. चावल, 7. मूंग
8. मूंगफली 9. कपास 10. गन्ना
11. चवला 12. मक्का 13. सोयाबीन
14 सूर्यमुखी 15. उड़द 16. अरहर
17. जूट, 18. अरण्डी

रबी की फसल/उनालू

अक्टूबर–नवम्बर से मार्च –अप्रैल
Long day plant
फसल
1. गेंहू 2. जौ 3. चना 4. मटर
5. मसूर 6. मेथी 7. **सरसों** 8. तारामीरा
9. ईसबगोल, 10. जीरा, 11. धनिया,
12. लहसुन, 13. अदरक, 14. हल्दी,
15. अफीम, 16. **अलसी 17. तम्बाकू**

जायद

मार्च – अप्रैल से
मई – जून
फसल
1. हरी सब्जियां,
2. खरबूजा 3. तरबूज़

नोट : – कुल कृषि फसलों में 65 प्रतिशत खरीफ एवं 35 प्रतिशत रबी की फसल बोई जाती है।

उपयोग के आधार पर कृषि फसलों का वर्गीकरण

(i) **दलहन/भूमि उर्वर फसलें**
दलहन फसलें – 1. चना 2. मूंग 3. मोठ 4. उड़द
नोटः–अरहर की दाल भूमि की उर्वरता को कम करती है।

(ii) **नगदी /व्यापारिक फसलें** :– उद्योगों मे आवश्यक, वे फसलें जो उद्योगों में कच्चे माल के रूप में प्रयोग/प्रयुक्त होती है।
1. कपास 2. मूंगफली 3. सरसों 4. ग्वार 5. गन्ना।

(iii) **तिलहन फसलें** :–
1. तिल 2. मूंगफली 3. सरसों 4. तारामीरा 5. सूर्यमुखी (सन फ्लावर) 6. सोयाबीन (तिलहन + दलहन) 7. जैतून 8. रतनजोत/जैट्रोफा 9. अरण्डी 10. होहोबा/जोजोबा 11. अलसी 12. राई

(iv) **रेशेदार फसलें** :–
1. कपास 2. जूट

(v) **खाद्यान्न**
1. गेहूं 2. चावल 3. बाजरा 4. मक्का 5. ज्वार 6. जौ

नोट :– राजस्थान की प्रमुख खाद्यान्न फसल **बाजरा** है।

प्रमुख फसलों के उपनाम

1. कपास	– बणियां एवं सफेद सोना
2. अफीम	– काला सोना
3. होहोबा / जोजोबा	– पीला सोना /गोल्ड ऑफ डेजर्ड
4. बांस	– आदिवासियों का हरा सोना
5. ज्वार	– गरीब की रोटी
6. ईसबगोल	– घोड़ा जीरा
7. जूट	– गोल्डन फाइबर
8. मूंगफली	– गरीब की बदाम

By Vijay Sihag Sir
7689007448

प्रमुख कृषि उत्पादों एवं फसलों का उत्पादन (2014–15)

फसल /उत्पाद	जिला	फसल /उत्पाद	जिला
1. मक्का	भीलवाड़ा	29. मूंग	नागौर
2. उड़द	बुन्दी	30. अरण्डी	जालौर
3. अफीम	चित्तौड़गढ़	31. अरहर	उदयपुर
4. आम	चित्तौड़गढ़	32. चवला	झुंझुनूं
5. कुल खाद्यान्न	अलवर	33. प्याज	जोधपुर
6. कुल अनाज	अलवर	34. मसूर	बूंदी
7. बाजरा	अलवर	35. कपास	हनुमानगढ़
8. राई	अलवर	36. मटर	जयपुर
9. सरसों	अलवर	37. मूंगफली	बीकानेर
10. अंगूर	श्रीगंगानगर	38. अलसी	टोंक,नागौर
11. ग्वार	श्रीगंगानगर	39. मैथी	सीकर
12 गेंहू	श्रीगंगानगर	40. ज्वार	नागौर
13. गन्ना	श्रीगंगानगर	41. चावल	बूंदी, हनुमानगढ़
14. खट्टे फल	श्रीगंगानगर	42. तिल	पाली
15. किन्नू/माल्टा	श्रीगंगानगर	43. मेहंदी	पाली
16. मौसमी	श्रीगंगानगर	44. तारामीरा	नागौर
17. जौ	श्रीगंगानगर	45. हरी मेथी	नागौर
18. संतरा	झालावाड़ (राजस्थान का नागपुर)	46. जीरा	जालौर
19. धनिया	झालावाड़	47. तम्बाकू	जालौर
20. सोयाबीन	बारां(प्रथम) झालावाड़ (द्वितीय)	48. मिर्ची	सवाईमाधोपुर
21. चना	बीकानेर	49. अमरूद	सवाईमाधोपुर
22. कुल तिलहन	बीकानेर	50. हल्दी	डुंगरपुर
23. कुल दलहन	बीकानेर	51. अदरक	उदयपुर
24. कुल मसाले	झालावाड़	52. लहसुन	बांरा
25. टमाटर	जयपुर	53. केला	बांसवाड़ा
26. मोठ	चुरू	54. अनार	हनुमानगढ़
27 आंवला	अजमेर	55. चीकू	सिरोही
28. बेर	बीकानेर	56. नीबूं	भरतपुर
		57. सौंफ	नागौर
		58. ईसबगोल	बाड़मेर

देश की फसलों में राजस्थान का प्रथम स्थान

1. बाजरा 2. मेथी 3. सरसों एवं रेपसीड 4. ग्वार 5. ईसबगोल 6. मूंग 7. मोठ 8. सौंफ 9. धनियां

नोट :– 2016–17 में उत्पादित कुल खाद्यान्न – 231.04 लाख मैट्रिक टन
2017–18 में अनुमानित खाद्यान्न उत्पादन – 225.82 लाख मैट्रिक टन
मोटे अनाज में राज्य का स्थान – प्रथम
समस्त तिलहन उत्पादन में – द्वितीय (प्रथम गुजरात)
सोयाबीन उत्पादन में – तृतीय (प्रथम मध्य प्रदेश, द्वितीय महाराष्ट्र)

By Vijay Sihag Sir
7689007448

प्रमुख कृषि फसलों के अनुकुल भौतिक दशाएं

फसल का नाम	तापमान	वर्षा की मात्रा	मिट्टी
1. कपास	20^{0}-30^{0}C	50-100 cm.	हल्की काली मिट्टी
2. मक्का	21^{0}-27^{0}C	50-80 cm.	दोमट्ट मिट्टी
3. बाजरा	30^{0}-35^{0}C	50 cm.	बलुई मिट्टी
4. गन्ना	15^{0}-25^{0}C	125 cm.	कांपीय मिट्टी
5. गेंहू	15^{0}-20^{0}C	75 cm.	दोमट्ट मिट्टी
6. सरसों	15^{0}-20^{0}C	100 cm.	दोमट्ट मिट्टी
7. मूंगफली	25^{0}-30^{0}C	50-75 cm.	दोमट्ट मिट्टी
8. चावल	20^{0}-27^{0}C	150-200 cm.	दोमट्ट मिट्टी

कृषि विकास हेतु किये जा रहे प्रयास

(i) . कृषि संबंधी एवं अन्य क्रांतियां :–

नाम	उत्पाद
1. हरित क्रांति	खाद्यान्न फसलें
2. श्वेत क्रांति /फ्लड ऑपरेशन	दुग्ध उत्पादन से
3. पीली	तिलहन उत्पादन से
4. नीली क्रांति	मछली उत्पादन से
5. लाल क्रांति	मांस/टमाटर
6. रजत क्रांति	अण्डों के उत्पादन से
7. अमृत क्रांति	जल से/नदी जोड़ो परियोजना से
8. कृष्ण क्रांति	पेट्रोलियम से
9. गोल क्रांति	आलू उत्पादन से
10. धूसर क्रांति	सीमेंट उत्पादन से
11. बादामी क्रांति	मसालों से सम्बंधित
12. इन्द्रधनुष क्रांति	सभी खाद्यान्न से सम्बंधित
13. सनराईज क्रांति	तकनीकी उद्योगों से सम्बंधित
14. स्वर्णिम क्रांति	बागवानी

(i) हरित क्रांति/पैकेज टेक्नोलॉजी क्रांति (1966–67)

जनक

1. वैश्विक स्तर पर
नॉरमन बोरलाग
मैक्सिको

2. भारत में
एम.एस. स्वामीनाथन

सर्वाधिक लाभ – गेंहूं, चावल
सर्वाधिक हानि – मोटे अनाज को (रागी, मक्का, बाजरा)
– क्षेत्रीय असमानता बढ़ी है – बेरोजगारी बढ़ी है
– सामाजिक असमानता बढ़ी है – भूमि की उर्वर क्षमता में कमी हुई है।

By Vijay Sihag Sir
7689007448

(ii) श्वेत क्रांति – 1970

- जनक – डॉ. वर्गीज कुरियन/अमूल बॉय
- डॉ. वर्गीस कुरियन ने गुजरात में आपरेशन फ्लड की शुरूआत की।
- दुग्ध क्रांति के कारण भारत का दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है।
- दुग्ध उत्पादन में राजस्थान का देश में दूसरा स्थान है। पहला – उत्तर प्रदेश तीसरा– गुजरात

(ii) कृषि एवं वन अनुसंधान केन्द्र

नाम	स्थान
1. तबीजी (बीजीय मसालों से सम्बंधित)	अजमेर (2010)
2. सरसों अनुसंधान केन्द्र (1993)	सेवर (भरतपुर)
3. बाजरा अनुसंधान केन्द्र	बाड़मेर
4. चावल अनुसंधान केन्द्र	बाँसवाड़ा
5. मक्का अनुसंधान केन्द्र	बाँसवाड़ा
6. ज्वार अनुसंधान केन्द्र	वल्लभ नगर (उदयपुर)
7. ईसबगोल अनुसंधान केन्द्र	जोधपुर
8. राज्य कृषि अनुसंधान केन्द्र	दुर्गापुरा (जयपुर)
9. खजूर अनुसंधान केन्द्र	बीछवाला (बीकानेर)
10. बेर अनुसंधान केन्द्र	बीकानेर
11. शुष्क बागवानी अनुसंधान केन्द्र	बीकानेर
12. काजरी	जोधपुर
13. आफरी	जोधपुर

(iii) कृषि फसलों की विशेष नस्लें

"फसलों की किस्म" / "जिन्स"

	नाम	किस्म
1.	बाजरा	राज–171, **R C B - 2**
2.	गेहुँ	कल्याण, सोना, सोनालिका, मालविका, कोहिनूर
3.	कपास	नरमा, अमेरिकी कपास
4.	जूट	मेस्ता
5.	मक्का	माही कंचन, माही धवल
6.	चावल	बासमती, माही सुगंधरा, परमल, चम्बल
7.	सोयाबीन	गौरव, पंजाब–1, पूसा–16, मैक्स–13, मोनेटा, टी–1 (गौरव पपू मैक्स मोना टी)
8.	मूंगफली	चन्द्रा
9.	सरसों	वरुणा, पूसा कल्याणी

By Vijay Sihag Sir
7689007448

(iv) कृषि विकास के प्रमुख कार्यक्रम :–

1. राष्ट्रीय बागबानी मिशन–

शुरूआत– 2005–06

उद्देश्य – बागबानी कृषि को बढ़ावा देना

सहयोग – केन्द्र : राज्य

अंश – 60 : 40

Note राजस्थान में 24 जिले वर्तमान में इसमें शामिल है।

2. राष्ट्रीय सूक्ष्म सिंचाई मिशन/ऑन फार्म वाटर मिशन

शुरूआत – 2005–06

उद्देश्य – जल संसाधनों प्रभावी एवं समुचित उपयोग हेतु बूंद–बूंद व फव्वारा सिंचाई पद्धति को बढ़ावा देना।

3. राष्ट्रीय कृषि विकास परियोजना :–

शुरूआत – 2007–08

उद्देश्य – कृषि क्षेत्रों के अन्तर्गत निवेश को बढ़ाना।

नोट :– यह योजना केन्द्र : राज्य सरकार (60 : 40) द्वारा प्रवर्तित योजना है।

4. राष्ट्रीय बम्बू मिशन :–

शुरूआत – 2007–08

उद्देश्य – बांस फसल के उत्पादन को बढ़ावा देना।

नोट :– बम्बू मिशन राज्य के 12 जिलों में सचालित हैं। (उदयपुर संभाग–उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, डुंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा + सिरोही, भीलवाड़ा, झालावाड़, बारां, करौली, सवाईमाधोपुर)

5. राष्ट्रीय औषधि पादप मिशन :–

शुरूआत – 2009–10

उद्देश्यी – औषधीय पादपों को बढ़ावा देना।

6. प्रधानमंत्री "फसल बीमा" योजना जनवरी, 2016

प्रावधान :
- नई बीमा योजना 'एक राष्ट्र–एक योजना थीम' (One Nation-One Scheme Theme) के अनुरूप है।
- खरीफ फसल के लिये 2 प्रतिशत प्रीमियम, रबी फसल के लिये 1.5 प्रतिशत प्रीमियम और बागवानी एवं व्यवसाय फसलों के लिये 5 प्रतिशत प्रीमियम का भुगतान करेगा।
- अगले 3 वर्षों में इस योजना पर 8800 करोड़ रूपये खर्च करने के साथ 50 प्रतिशत किसानों को कवर करने का लक्ष्य रखा गया है।
- यह फसल बीमा योजना KCC (Kishan Credit Card) धारक किसानों के लिए अनिवार्य होगी।
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना भारतीय कृषि बीमा कम्पनी लि. (AIC - Agriculture Insurance Company of India Ltd.) के द्वारा संचालित की जाएगी।

7. प्रोजेक्ट गोल्डन रेंज 2009 – 11वीं पंच वर्षीय योजना उदयपुर, बांसवाड़ा, में मक्का उत्पादकता बहुत कम है, वहां उन्नत किस्मों से उत्पादन को बढ़ाना।

8. मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना :–

शुरूआत – 19 फरवरी, 2015 (सूरतगढ़–श्रीगंगानगर)

उद्देश्य – भूमि में उर्वरकों का उचित उपयोग करना।

(v) कृषि फार्मो की स्थापना

By Vijay Sihag Sir 7689007448

1. सूरतगढ़ कृषि फार्म – श्रीगंगानगर सहयोग – रूस राज्य का प्रथम कृषि फार्म	2. जैतसर कृषि फार्म – श्रीगंगानगर सहयोग – कनाडा

(vi)कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना :–

1. महाराणा प्रताप कृषि व तकनीकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
2. स्वामी केश्वानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
3. श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर (जयपुर)
4. कृषि विश्वविद्यालय, मंडोर (जोधपुर)
5. कृषि विश्वविद्यालय, बोरखेड़ा (कोटा)

नोट :– राज्य का सबसे पहला कृषि विश्वविद्यालय "स्वामी केश्वानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर" है।

(vii) राजस्थान की नवीनतम कृषि नीति – 26 जून, 2013

कृषि नीति के प्रावधान :–

- नवीनतम कृषि नीति में लक्ष्य दर 4 प्रतिशत रखी गई है।
- 10 वर्ष में खाद्यान्न उत्पादन को दोगुना करना
- कृषि के वार्षिक योजना व्यय को 6 प्रतिशत से बढ़ाकर 10 प्रतिशत करना।

(viii) 12वीं पंचवर्षीय योजना में कृषि की लक्ष्य दर–

राज्य द्वारा – 3.5 प्रतिशत रखी गई है।

(ix) कृषि उत्कृष्टता केन्द्र –

- खजूर उत्कृष्टता केन्द्र – सगराभोजका (जैसलमेर)
- संतरा उत्कृष्टता केन्द्र – नांता (कोटा)
- अमरूद उत्कृष्टता केन्द्र – टोंक
- आम उत्कृष्टता केन्द्र – धौलपुर

नोट :– खजूर, संतरा कृषि उत्कृष्टता केन्द्र "इन्डो–इजराईल सहयोग" पर आधारित हैं।

(x) GRAM-I (Global Rajsthan Agritech Meet - 9 to 11 November, 2016)

- स्थान – सीतापुरा, जयपुर
- सहयोग – राजस्थान सरकार एवं फैडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (FICCI) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।
- राजस्थान में कृषि, बागवानी, डेयरी, पशुपालन, फुड प्रोसेसिंग में निवेश को बढ़ाना।
- इस कार्यक्रम में कुल 4400 करोड़ का निवेश हुआ है।
- इस सम्मेलन में पार्टनर देश इजराइल एवं सहभागी देश नीदरलैण्ड, ईरान, कजाकिस्तान, पापुआन्यूगिनी, नाईजीरिया एवं जापान थे।

Note:-GRAM-II – कोटा, **GRAM-III** – उदयपुर, **GRAM-IV** – जोधपुर (प्रस्तावित)

प्रश्न.1 जैविक कृषि कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य क्या है ?

उत्तर 1. मृदा की जैविक गुणवत्ता को बनाए रखना।
2. वर्तमान कृषि में उर्वरक व कीटनाशी रसायनों के अधिक प्रयोग से हाने वाले दुष्परिणाम से बचना।
3. प्राकृतिक संसाधनों का कुशलतम उपयोग।
4. फसल उत्पादन को बढ़ाना एवं उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार लाना।
5. पर्यावरण प्रदुषण रोकना।

प्रश्न.2 आर्गेनिक फार्मिंग ?

उत्तर वह कृषि जिसमें रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाईंयों का प्रयोग नहीं किया जाता ये केवल जैविक एवं प्राकृतिक खादों पर आधारित होती है। इसमें प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम और लागत अधिक आती है

पशुसम्पदा

By Vijay Sihag Sir
7689007448

– राजस्थान में पशुगणना का कार्य राजस्वमण्डल अजमेर द्वारा किया जाता है।
- पशुगणना प्रति 5 वर्ष में आयोजित होती है।
- प्रथम पशुगणना – 1919–1920 में आयोजित की गई।
- नवीनतम 19वीं पशुगणना – 2012 में आयोजित की गई।
- नवीनतम पशु गणना के अनुसार राजस्थान में कुल पशु सम्पदा – 577.32 लाख
- नवीनतम पशु गणना के अनुसार पशु : –

सर्वाधिक	**सबसे कम**
1. बाड़मेर	1. धौलपुर
2. जोधपुर	2. कोटा
3. जैसलमेर	
4. नागौर	

- 19वीं पशु गणना में पशु सम्पदा में बढ़ोतरी – 1.89 %
- 19वीं पशु गणना में राजस्थान में पशु सम्पदा देश की कुल पशु सम्पदा का – 11.27 %
- 19वीं पशुसम्पदा के अनुसार राजस्थान में पाये जाने वले सर्वाधिक पशु :

Ist बकरी = 37.53 %
IInd गाय = 23.08 %
IIIrd भैंसें = 22.48 %
IVth भेड़ = 15.73 %

- 19वीं पशुगणना के अनुसार राज. के पशुघनत्व = 169

सर्वाधिक	**सबसे कम**
1. दौसा – 292	1. जैसलमेर – 83
1. राजसमंद – 292	2. बीकानेर – 102
2. डूंगरपुर – 289	3. चुरू – 110
3. बांसवाड़ा – 279	4. बारां – 115

- 19वीं पशुगणना में सर्वाधिक **बढ़ोतरी** वाले पशु :

(संख्या के आधार पर)	(प्रतिशत के आधार पर)
1. भैस	1. खच्चर – 280.93 प्रतिशत
2. गाय	2. भैंस – 16.99 प्रतिशत
3. बकरी	
4. सुअर	

- 19वीं पशुगणना में सर्वाधिक **कमी** वाले पशु :

(संख्या के आधार पर)	(प्रतिशत के आधार पर)
1. भेड़	1. कुत्ते – 54.29 प्रतिशत
2. ऊँट	2. ऊँट – 22.79 प्रतिशत
3. गधा	3. गधे – 20.23 प्रतिशत
4. कुत्ता	4. भेड़ – 18.86 प्रतिशत

– नवीनतम पशुगणना के अनुसार वे पशु जो देश में सर्वाधिक राजस्थान में है –

1. ऊँट
2. गधा
3. बकरी

* देश में राज. का

बकरा मांस उत्पादन में राज.	– 1st	
ऊन उत्पादन में	– 1st	
पशुसम्पदा में	– 2nd (1st U.P.)	
दुग्ध उत्पादन में	– 2nd - 12.73 % (1st U.P.)	

By Vijay Sihag Sir
7689007448

* **राजस्थान की पशु नस्ले –**

2007 की 18वीं पशुगणना प्रथम बार पशुओं की नस्ल के आधार पर की गई।

1. बकरी – सर्वा. – बाड़मेर।

बकरी की नस्ले	क्षेत्र	विशेष
1. मारवाड़ी व लोही	उत्तर पश्चिमी राजस्थान	मांस के लिए प्रसिद्ध है।
2. जखराना या अलवरी	अलवर	सर्वाधिक दूध देने वाली बकरी की नस्ल
3. शेखावाटी	सीकर, झुंझुनूं	बिना सींग बकरी। यह काजरी वैज्ञानिकों द्वारा विकसित कि गई नस्ल है।
4. परबतसरी	नागौर, अजमेर, टोंक	अच्छा दूध देने वाली नस्ल
5. बारबरी	पूर्वी राजस्थान	सर्वाधिक सुंदर बकरी की नस्ल।
6. सिरोही	सिरोही, जालौर	मांस के लिए प्रसिद्ध है।
7. जमनापरी	हाड़ौती	मांस व दुध के लिए प्रसिद्ध है।

2. गौवंश – सर्वा. – उदयपुर, चित्तौड़गढ़।

गौवंश की नस्ले	क्षेत्र	विशेष
1. राठी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर	सर्वाधिक दूध देने के कारण राजस्थान की **कामधेनु।**
2. थारपारकर	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर	मूल स्थान – सिंध प्रांत (पाकिस्तान) की नस्ल।
3. गीर	अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़	मूलतः गुजरात की नस्ल
4. नागौरी	नागौर	नागौरी बेल दौड़ने में, भारवहन तथा कृषि कार्यों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते है।
5. कांकरेज	बाड़मेर, जालौर	मूलतः गुजरात की नस्ल
6. मेवाती	अलवर, भरतपुर	बोझा ढ़ोने हेतु
7. हरियाणवी	सीकर, झुंझुनूं	मूलतः हरियाणा की नस्ल
8. मालवी	दक्षिणी पूर्वी राजस्थान	मूलतः मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र
9. साँचौरी	जालौर, सिरोही	

विदेशी नस्ल

1. जर्सी	मूलतः अमेरिका
2. रेड डेन	मूलतः डेनमार्क
3. हॉलिस्टिन	मूलतः हॉलैण्ड व अमेरिका। शरीर पर काले सफेद चकते। सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल

3. भैंस – सर्वा. प्रथम – जयपुर, द्वितीय – अलवर

भैंस की नस्ले	क्षेत्र	विशेष
1. मुर्रा (खुण्डी)	पूर्वी राजस्थान	राजस्थान में सर्वाधिक पायी जाने वाली एवं सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल।
2. सूरंती	उदयपुर	मूलतः गुजरात की नस्ल।
3. जाफराबादी	दक्षिणी पश्चिमी राजस्थान	मूलतः गुजरात की नस्ल।
4. मेहसाना	दक्षिणी–पश्चिमी राजस्थान	मूलतः गुजरात
5. भदावरी	पूर्वी राजस्थान	मूलतः उत्तरप्रदेश की नस्ल एवं सर्वाधिक वसा वाला दूध।

By Vijay Sihag Sir
7689007448

4. भेड़े – सर्वा. – बाड़मेर

भेड़ की नस्ले	**क्षेत्र**	**विशेष**
1. मालपुरी	जयपुर, टोंक, सवाईमाधोपुर	ऊन मोटी होने के कारण गलीचों के लिए उपर्युक्त।
2. चोकला	झुंझनूं, सीकर, बीकानेर	सर्वश्रेष्ठ किस्म की ऊन प्राप्त होती है, इसे भारत की **मेरिनो** कहा जाता है।
3. सोनाड़ी/चनोथर	उदयपुर, डूँगरपुर, चित्तौड़गढ़	इसके कान सर्वाधिक लम्बे होते है।
4. नाली	हनुमानगढ़, गंगानगर	घग्घर नदी के किनारे हनुमानगढ़ में पायी जाने वाली नस्ल।
5. पूगल	बीकानेर	....
6. मगरा	बीकानेर	इसे बीकानेरी चोकला कहा जाता है।
7. मारवाड़ी	जोधपुर, बाड़मेर, नागौर	राजस्थान में सर्वाधिक पायी जाने वाली भेंड़ की नस्ल
8. जैसलमेरी	जैसलमेर, जोधपुर	सर्वाधिक ऊन इसी भेंड़ की नस्लों से प्राप्त होती है।
9. खेरी	जोधपुर, पाली, नागौर	इसकी ऊन गलीचों के लिए उपयुक्त होती है।

विदेशी नस्लें

1. रूसी मेरिनो	टोंक, जयपुर, सीकर	2. डोर्सेट	टोंक
3. रेम्बुल	टोंक	4. कोरिडेल	चित्तौड़गढ़

5. ऊँट – सर्वा. – जैसलमेर

ऊँटकी नस्ले	**क्षेत्र**	**विशेष**
1. बीकानेरी	बीकानेर	बोझा ढोने के लिए।
2. नाचना	जैसलमेर (नाचना)	सुन्दरता, दौड़ के लिए प्रसिद्ध।
3. गोमठ	जोधपुर	ऊँट सवारी के लिए प्रसिद्ध है।

अन्य नस्लें –

सिंधी, कच्छी, मेवाती।

नोट:– कैमल मिल्क मिनी प्लांट जयपुर में स्थापित किया जायेगा।

6. अश्व – सर्वा. – बीकानेर

अश्व की नस्ले	**क्षेत्र**	**विशेष**
1. मालाणी	बाड़मेर	सर्वश्रेष्ठ घोड़े की नस्ल।
2. मारवाड़ी	पश्चिमी राजस्थान	....
3. काठियावाड़ी	बाड़मेर, जालौर	इस नस्ल के घोड़े का सिर अरबी घोड़े जैसा होता है।

7. गधे सर्वाधिक – बाड़मेर

8. सुअर सर्वाधिक – भरतपुर।

9. कुक्कुट सर्वाधिक – अजमेर, उदयपुर

10. खच्चर सर्वाधिक – अलवर

♦ राजस्थान के प्रमुख पशु मेले –

पशु मेला	**स्थान**	**पशु गौवंश**
1. श्री बलदेव पशु मेला	मेड़ता (नागौर)	नागौरी
2. श्री तेजाजी पशु मेला	परबतसर (नागौर)	नागौरी
3. श्री रामदेव पशु मेला	मानासर (नागौर)	नागौरी
4. श्री मल्लीनाथ पशु मेला	तिलवाड़ा (बाड़मेर)	थारपारकर कांकरेज
5. चन्द्रभागा पशु मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	मालवी
6. श्री गोमतीसागर पशु मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	मालवी
7. जसवंत पशु मेला	भरतपुर	हरियाणवी
8. गोगामेड़ी पशु मेला	हनुमानगढ़	हरियाणवी
9. शिवरात्रि पशु मेला	करौली	हरियाणवी
10. कार्तिक पशु मेला	पुष्कर (अजमेर)	गीर

◆ **पशु प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र –**

By Vijay Sihag Sir
7689007448

प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र	**स्थान**
1. राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केन्द्र	जोहड़बीड़
2. केन्द्रीय पशु अनुसंधान केन्द्र	सुरतगढ़, श्रीगंगानगर
3. भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र	अविकानगर, टोंक
4. भैंस अनुसंधान केन्द्र	वल्लभ नगर, उदयपुर
5. भैंस प्रजनन केन्द्र	डग (झालावाड़), कुम्हेर (भरतपुर)
6. बुल मदर फार्म	चाँदन गाँव, जैसलमेर
7. बकरी प्रजनन केन्द्र	रामसर, अजमेर
8. शूकर/सुअर प्रजनन केन्द्र	अलवर
9. अश्व प्रजनन व अनुसंधान संस्थान	केरू (जोधपुर)

पशु विकास से संबंधित प्रमुख योजनाएँ व संस्थान –

1. गोपाल योजना :–

शुरूआत– 2 अक्टूबर, 1990

उद्देश्य – ग्रामीण युवकों की भागीदारी से पशुधन नस्ल सुधार, पशुपालकों के आर्थिक विकास व युवाओं को रोजगार प्रदान करने हेतु चलायी गई योजना।

2. कामधेनु योजना :–

शुरूआत– 1997–98

उद्देश्य – गौवंश संबंधित तकनीक आधारित पशु प्रजनन फार्म स्थापित करना।

3. एडमास योजना (ADMAS - Animal Disease Monitoring and Surveillance Project) :–

शुरूआत– 1999

उद्देश्य – ICAR (भारतीय कृषि अंनुसंधान परिषद) के द्वारा गौ एवं भैंस वंश के रोगों के निदान हेतु।

4. राजीव गांधी कृषि एवं पशुपालन विकास मिशन :–

शुरूआत– 19 जनवरी, 2010

उद्देश्य – पशु विकास नीति के उद्देश्यों की पूर्ति करना।

5. मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना :–

शुरूआत– 15 अगस्त, 2012

उद्देश्य – राज्य सरकार द्वारा पशु विकास हेतु आवश्यक दवाइयों का निःशुल्क वितरण करने सम्बंधित योजना।

6. अविका कवच योजना :–

– यह भेड़ों की बीमा योजना है जिसके तहत SC, ST एवं BPL को बीमा प्रीमियम में 80% अनुदान दिया जायेगा। जबकि अन्य पशुपालकों को 70% अनुदान दिया जाएगा।

7. भामाशाह पशु बीमा योजनाः– 2016–2017

– इसमें बीमा 1 या 3 साल का होगा

– बीमा राशि में BPL/SC/ST को 70% एवं शेष पशु पालकों को 50% अनुदान दिया जायेगा।

– बीमा राशि गाय–40,000 भैस–50,000 और भेड़/बकरी/सुअर (10 इकाई)–50,000 और ऊँट/घोड़ा/गधा–50,000

– एक परिवार अधिकतम 5 बड़े (गाय, भैस, ऊँट, घोड़ा, गधा) और 50 छोटे (भेड, बकरी, सुअर) का बीमा करवा सकते है।

7. आइबोमिक्स :–

– काजरी के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार रासायनिक मिश्रण जिसे पानी में घोलकर भेड़–बकरियों को पिलाने पर दूध में बढ़ोतरी होती है।

8. राजस्थान पशु विकास बोर्ड का गठन – 25 मार्च, 1998 जयपुर

9. राजस्थान पशु चिकित्सा व पशुविज्ञान विश्व विद्यालय (**RAJUVAS**- Rajasthan University of Veterinary & Animal Science) – बीकानेर 2010

10. हिमकृत वीर्य बैंक राजस्थान में **बस्सी जयपुर** में स्थापित किया गया।

11. गौमुत्र रिफाइनरी राजस्थान में पथमेड़ा, जालौर में स्थापित की गई है।

By Vijay Sihag Sir
7689007448

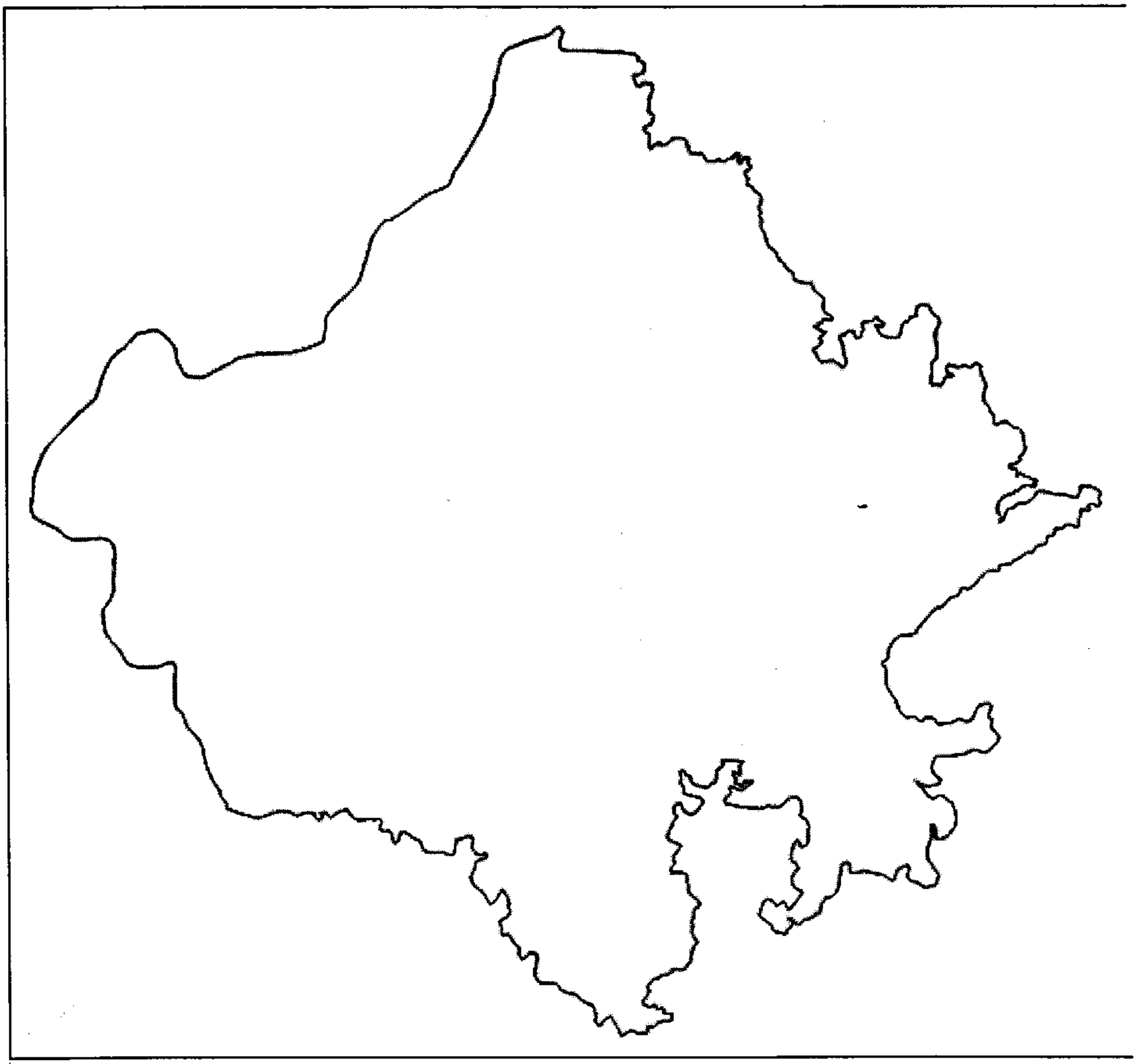

By Vijay Sihag Sir
7689007448

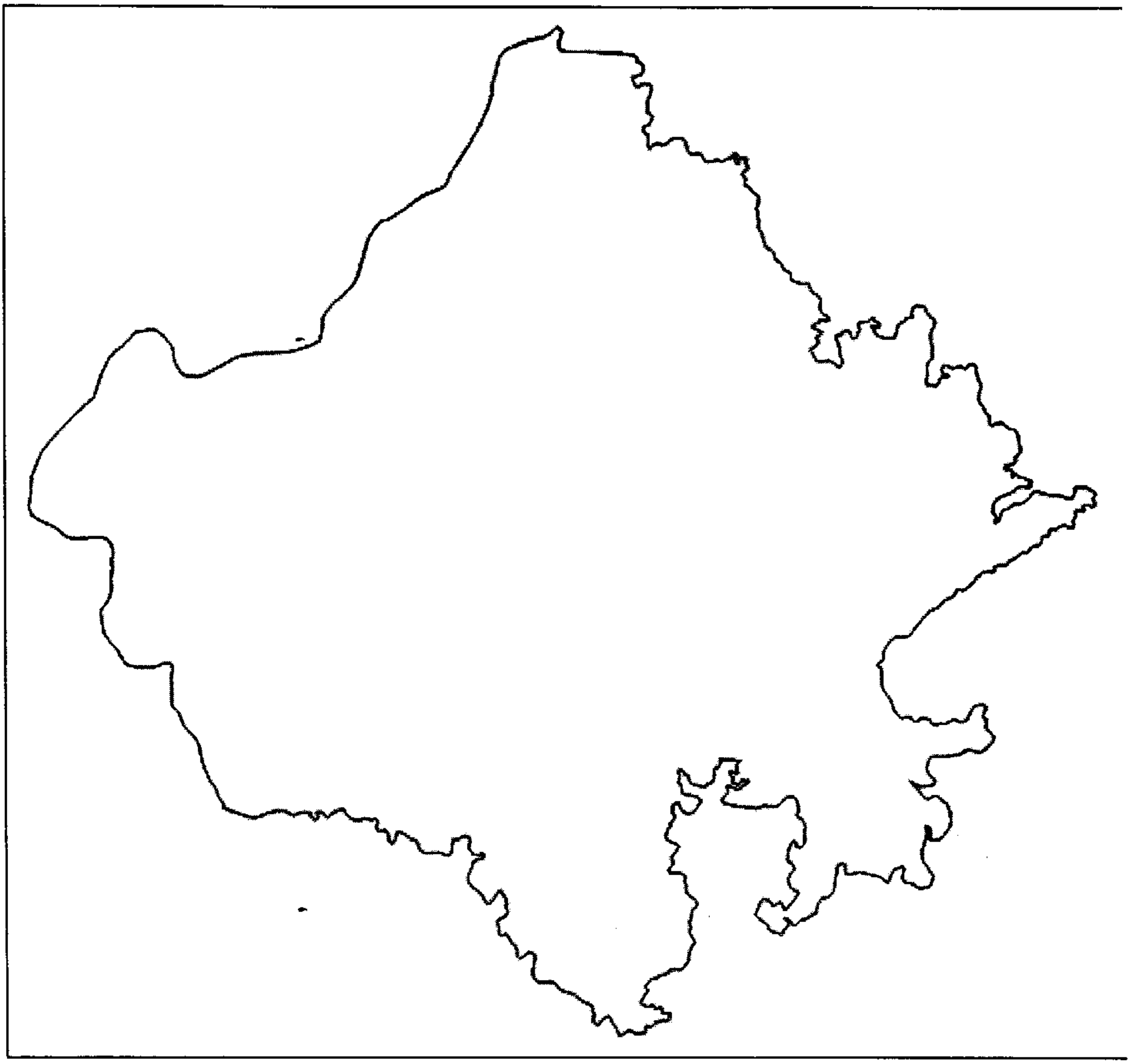

By Vijay Sihag Sir
7689007448

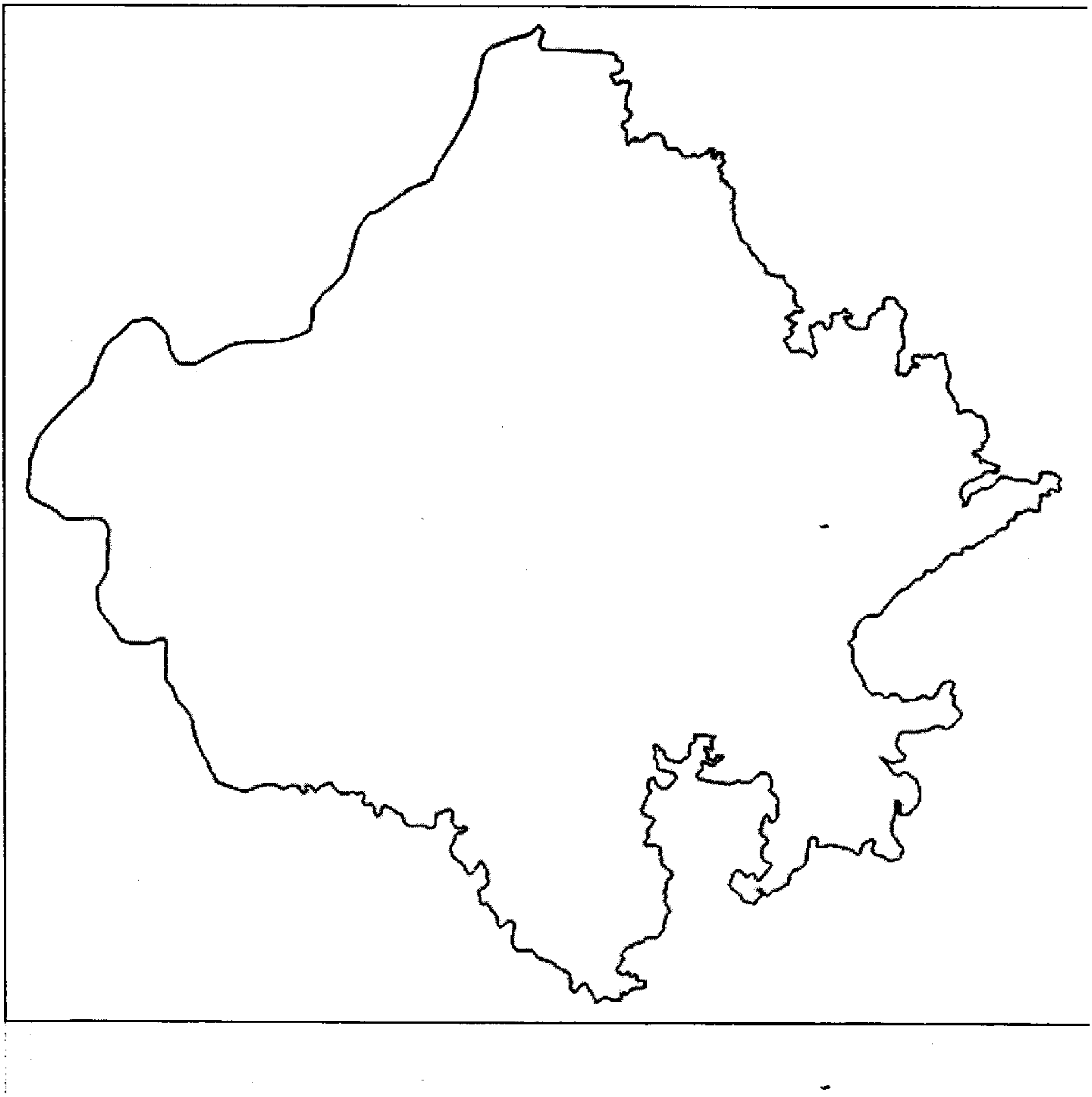

By Vijay Sihag Sir
7689007448

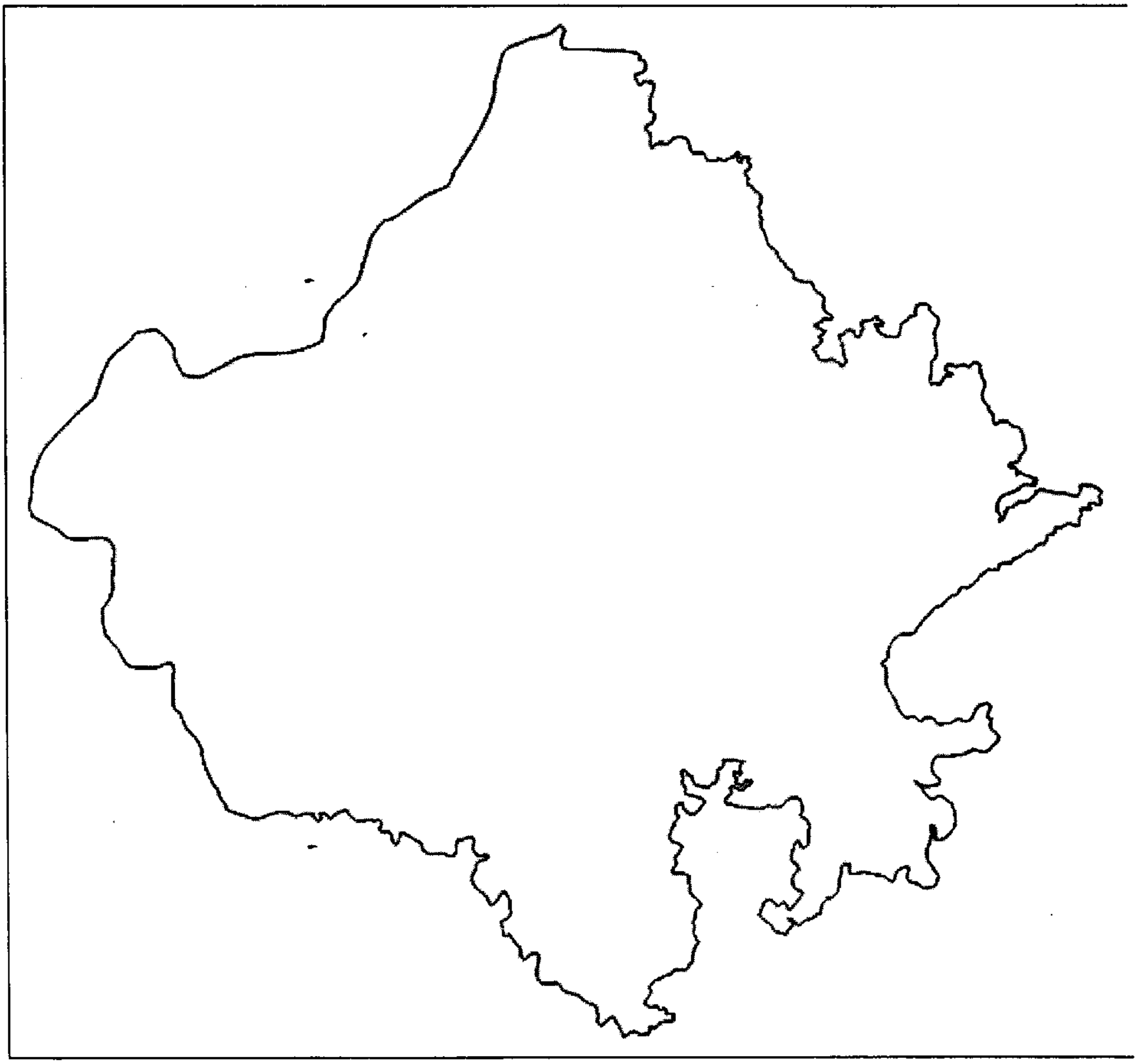

ऊर्जा

☞ किसी राज्य के औद्योगिक, आर्थिक एवं आधारभूत विकास में ऊर्जा का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
☞ स्वतंत्रता के समय राजस्थान में स्थापित कुल विद्युत क्षमता 13.27 मेगावाट।
☞ वर्तमान में राजस्थान में स्थापित कुल विद्युत क्षमता **19537** मेगावाट (31 दिसम्बर 2017 तक)।

- केन्द्रीय परियोजनाओं से राजस्थान को – 3210 मेगावाट ऊर्जा प्राप्त होती है।
- निजी क्षेत्र में – 3552 मेगावाट ऊर्जा प्राप्त होती है।
- पवन ऊर्जा के रूप में 4121 मेगावाट ऊर्जा प्राप्त होती है।
- सौर ऊर्जा के रूप में 1657 मेगावाट ऊर्जा प्राप्त होती है।
- बायोमास परियोजनाओं से – 101.95 मेगावाट ऊर्जा प्राप्त होती है।

I. ऊर्जा संसाधन का वर्गीकरण –

उपयोगिता के आधार पर दो भागों में किया जाता है –

उपयोगिता के आधार पर

- परम्परागत ऊर्जा (Conventional Energy)
- गैरपरम्परागत ऊर्जा (Non Conventional Energy)

1. परम्परागत ऊर्जा संसाधन :–

वे ऊर्जा साधन जिनका उपयोग लम्बे समय से किया जा रहा है। एवं जिनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए नवीन तकनीक की आवश्यकता नहीं होती, उन्हे परम्परागत ऊर्जा संसाधन कहते है।

- जल विद्युत (Hydropower)
- तापीय ऊर्जा (Thermal Power) – कोयला, गैस, पैट्रोलियम

2. गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधन :–

वे ऊर्जा संसाधन जो अपेक्षाकृत नये हों, तथा जिनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए उन्नत तकनीक की आवश्यकता होती है। इन्हें गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधन कहते है।

जैसे – न्यूक्लीयर एनर्जी (Nuclear Energy)
– सौर ऊर्जा (Solar Energy)
– पवन ऊर्जा (Wind Energy)
– बायोगैस ऊर्जा (Biogas Energy)
– बायोमास ऊर्जा (Biomas Energy)
– ज्वारीय ऊर्जा (Tidal Energy)
– भू–तापीय ऊर्जा (Geo-Thermal Energy)

II. विद्युत स्टेशन के प्रकार :–

1. **सुपर थर्मल पावर स्टेशन** :– यदि किसी पावर स्टेशन की कुल क्षमता 1000 मेगावाट से अधिक हो तो उसे "सुपर थर्मल पावर स्टेशन" कहते है।
   जैसे – सूरतगढ, कोटा, छबड़ा
2. **सुपर क्रिटिकल पॉवर स्टेशन** :– यदि किसी पॉवर स्टेशन की एक इकाई की क्षमता 500 मेगावाट से अधिक हो तो इसे सुपर क्रिटिकर पावर स्टेशन कहते है।
   जैसे – छबड़ा (बारां) कालीसिंध

राजस्थान की विद्युत परियोजना

- परम्परागत
  - जलीय ऊर्जा
  - तापीय ऊर्जा
- गैर–परम्परागत
  - परमाणु ऊर्जा
  - सौर ऊर्जा
  - पवन ऊर्जा
  - बायोमास
  - बायोगैस
  - बायोफ्यूल / बायोडीजल

I. परम्परागत ऊर्जा :–

1. जलीय ऊर्जा

- राज्य सरकार
- राज्य : राज्य
- केन्द्र सरकार

a. राज्य सरकार की जल विद्युत परियोजना :–

1. जाखम लघु पन विद्युत परियोजना – प्रतापगढ़
   उत्पादन – 5.4 मेगावाट
2. अनास जल विद्युत परियोजना – बांसवाड़ा
   उत्पादन – 140 मेगावाट
3. इंदिरागांधी लघु पन विद्युत परियोजना
   उत्पादन – 23.85 मेगावाट

b. राज्य : राज्य सहयोग की जल विद्युत परियोजना :–

1. **भांखला – नांगल जल विद्युत परियोजना**
   राज्य – राजस्थान, पंजाब, हरियाणा
   क्षमता – 1493 मेगावाट
   राजस्थान की हिस्सेदारी – 15.2 % (227 मेगावाट)
2. **व्यास जल विद्युत परियोजना :–**
   राज्य – राजस्थान, हरियाणा, पंजाब
   राजस्थान की हिस्सेदारी – 422 मेगावाट
3. **माही – बजाज सागर जल विद्युत परियोजना :–**
   राज्य – राजस्थान, गुजरात
   – यह परियोजना 2 चरणों में निर्मित है।
   $2\,Unit \times 45\,MW = 90MW$
   $2\,Unit \times 25\,MW = 50MW$
   – इस परियोजना में उत्पादित 100% ऊर्जा केवल राजस्थान की है।
4. **चम्बल जल विद्युत परियोजना :–**
   – यह राजस्थान, मध्यप्रदेश की योजना है।

– इस योजना में राजस्थान, मध्यप्रदेश का योगदान 50 : 50 है।
– इस योजना में तीन बांधो से कुल 386 मेगावाट जल विद्युत ऊर्जा का उत्पादन है।

- गांधी सागर – $23\,MW \times 5\,Unit = 115\,MW$
- राणा प्रताप सागर – $43\,MW \times 4\,Unit = 172\,MW$
- जवाहर सागर – $33\,MW \times 3\,Unit = 99\,MW$

5. **राहूघाट प्रोजेक्ट – करौली (प्रस्तावित)**
यह राजस्थान, मध्यप्रदेश की योजना है। (50 : 50)
उत्पादन क्षमता – 79 मेगावाट
नदी – चम्बल

c. केन्द्र सरकार की जल विद्युत परियोजना :–

1. **सलाल परियोजना – जम्मू–कश्मीर**
   - यह परियोजना चिनाब नदी पर संचालित है।
   - इस परियोजना का संचालन NHPC (नेशनल हाइड्रोपॉवर कोर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है।
   - इस परियोजना से जम्मू व कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश व चण्डीगढ़ लाभान्वित होते है।
2. **दुलहस्ती परियोजना – जम्मू–कश्मीर**
   - यह परियोजना चिनाब नदी (चंद्रा नदी) पर संचालित है।
   - इस परियोजना का संचालन NHPC (नेशनल हाइड्रोपॉवर कोर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है।
   - इस परियोजना से जम्मू व कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश व चण्डीगढ़ लाभान्वित होते है।
3. **उरी परियोजना – जम्मू – कश्मीर**
   - यह परियोजना झेलम नदी पर संचालित है।
   - इस परियोजना का संचालन NHPC (नेशनल हाइड्रोपॉवर कोर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है।
   - इस परियोजना से जम्मू व कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, व चण्डीगढ़ लाभान्वित होते है।
4. **चमेरा परियोजना – हिमाचल**
   - यह परियोजना रावी नदी पर संचालित है।
   - इस परियोजना का संचालन NHPC (नेशनल हाइड्रोपॉवर कोर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है।
   - इस परियोजना से जम्मू व कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, व चण्डीगढ़ लाभान्वित होते है।
5. **पार्वती परियोजना – हिमाचल**
   - यह परियोजना पार्वती नदी पर संचालित है।
   - इस परियोजना का संचालन NHPC (नेशनल हाइड्रोपॉवर कोर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है।
   - इस परियोजना से गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश लाभान्वित होते है।
6. **नाथपा–झाकरी परियोजना – हिमाचल**
   - यह परियोजना सतलज नदी पर संचालित है।
   - इस परियोजना का संचालन NHPC (नेशनल हाइड्रोपॉवर कोर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है।
   - इस परियोजना से उत्तराखण्ड, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश व चण्डीगढ़

लाभान्वित होते है।

7. टिहरी परियोजना – उत्तराखण्ड

- यह परियोजना भागीरथी नदी पर संचालित है।
- इस परियोजना का संचालन टिहरी जल विद्युत विकास निगम द्वारा किया जाता है।
- इस परियोजना से राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड लाभान्वित होते है।
- यह परियोजना रूस के तकनीकी सहयोग से निर्मित की गई है।

8. टनकपुर परियोजना – उत्तराखण्ड

- यह परियोजना शारदा (काली) नदी पर संचालित है।
- इस परियोजना का संचालन NHPC (नेशनल हाइड्रोपॉवर कोर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है।
- इस परियोजना से जम्मू व कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश व चण्डीगढ़ लाभान्वित होते है।

9. धौलीगंगा परियोजना – उत्तराखण्ड

- यह परियोजना धौलीगंगा नदी पर संचालित है।
- इस परियोजना का संचालन NHPC (नेशनल हाइड्रोपॉवर कोर्पोरेशन) द्वारा किया जाता है।
- इस परियोजना से जम्मू व कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश व चण्डीगढ़ लाभान्वित होते है।

नोट : ताला (भूटान) जल विद्युत परियोजना से राजस्थान को 57.68 मिलयन यूनिट विद्युत प्राप्त होती है।

निष्कर्ष : जल विद्युत ऊर्जा में और अधिक विकास एवं योजना निर्माण की आवश्यकता है। जिससे राजस्थान में ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाकर ऊर्जा सुरक्षा दिलायी जा सके।

2. तापीय ऊर्जा :

- ऊर्जा उत्पादन में तापीय ऊर्जा का योगदान सर्वाधिक है।
- इस ऊर्जा के प्रमुख साधन – कोयला, प्राकृतिक गैस एवं पैट्रोलियम/नेप्था है।
- तापीय ऊर्जा में सर्वाधिक योगदान कोयले का है।

a. कोयला/लिग्नाइट आधारित परियोजनाए :

राज्य सरकार की योजना | केन्द्र सरकार की योजना

I. राज्य सरकार की योजना :

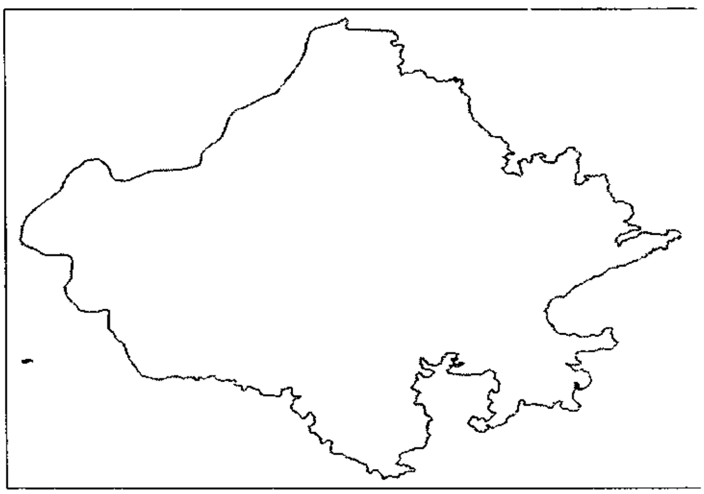

i. सुरतगढ़ सुपर थर्मल पावर प्लांट (श्रीगंगानगर):–

– उत्पादन क्षमता 1500 MW

– यह राजस्थान का प्रथम सुपर थर्मल पावर प्लांट

ii. कोटा सुपर थर्मल पावर प्लांटः–

– उत्पादन क्षमता 1240 MW

– यह राजस्थान का प्रथम कोयला आधारित थर्मल पावर प्लांट व दूसरा सुपर थर्मल पावर प्लांट है।

iii. छबडा सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट (बांरा):–

– उत्पादन क्षमता 1660 MW

iv. कवई सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट (बांरा):–

– उत्पादन क्षमता 1320 MW

v. कालीसिंध सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट (झालावाड़):–

– उत्पादन क्षमता 1200 MW

vi. कपूरडी जालीपा सुपर पावर प्लांट (बाडमेर):–

– उत्पादन क्षमता 1080 MW

vii. भादरेस सुपर पावर प्लांट (बाडमेर):–

– उत्पादन क्षमता 1080 MW

viii. दानपुर सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट (बासवाड़ा):–

– उत्पादन क्षमता 1320 MW

II. केन्द्र सरकार की योजना :

i. ऊँचाहार सुपर थर्मल पावर प्लांटः– U.P
ii. रिहंद सुपर थर्मल पावर प्लांटः– U.P
iii. सिंगरौली सुपर थर्मल पावर प्लांटः– U.P
iv. कहल गाँव सुपर थर्मल पावर प्लांटः– बिहार
v. तलचर सुपर थर्मल पावर प्लांटः– ओड़िसा

b. प्राकृतिक गैस आधारित योजनाएँ :

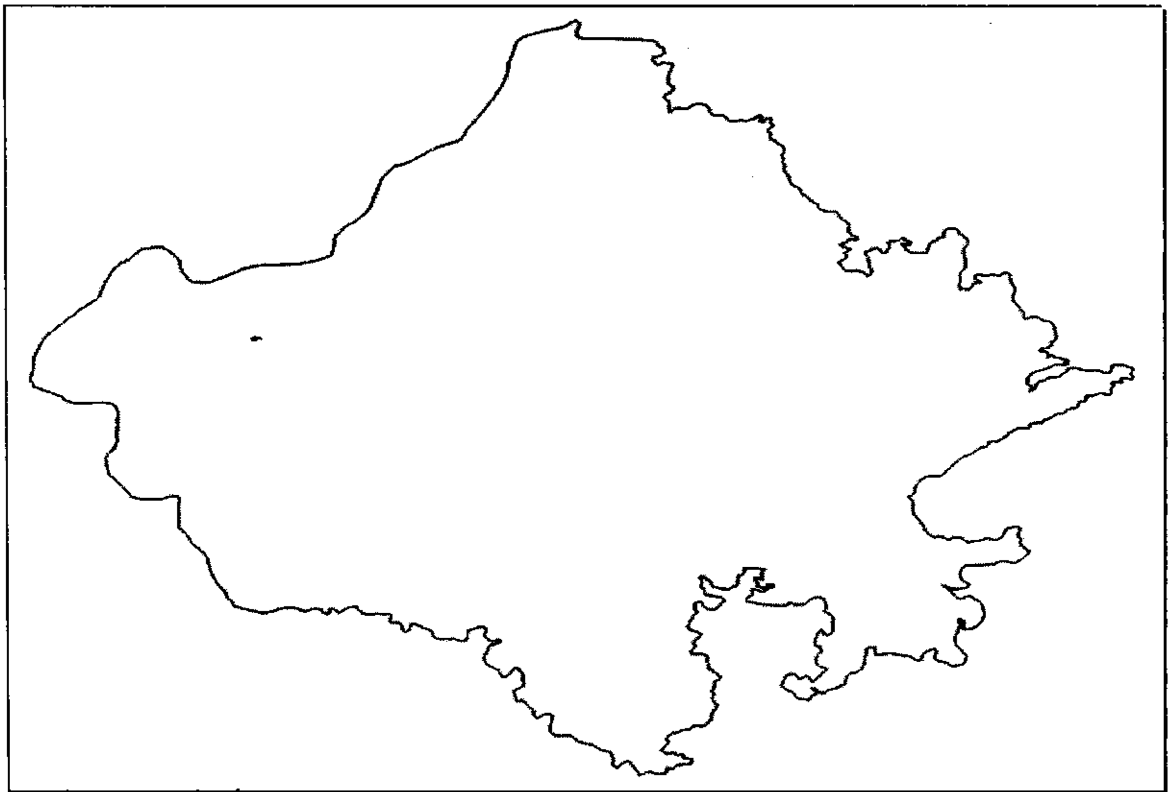

राज्य गैस विधुत परियोजना

i. रामगढ़ – जैसलमेर
ii. कम्बाइंड साईकिल गैसविद्युत परियोजना – धौलपुर
iii. झामर कोटड़ा – उदयपुर

केन्द्र गैस विधुत परियोजना

i. अंता – बांरा
ii. दादरी – U.P.
iii. औरैया – U.P.

नोटः– राजस्थान की प्रथम गैस विद्युत परियोजना – अंता
जबकी राज्य सरकार की प्रथम गैस विद्युत परियोजना – रामगढ़

c. तरल ईंधन/नेप्था आधारित प्रोजेक्ट :

1 धौलपुर पॉवर प्लांट :

प्रथम चरण – 330 मेगावाट
द्वितीय चरण – 372.7 मेगावाट
कुल क्षमता – 702.7 मेगावाट

2 केशोरायपाटन थर्मल पॉवर प्लांट (प्रस्तावित)

उत्पादन क्षमता – 166 मेगावाट

I. गैरपरम्परागत ऊर्जा संसाधन :

1. परमाणु ऊर्जा

- राजस्थान परमाणु पॉवर प्रोजेक्ट – रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)
- स्थापना – 30 नवम्बर, 1972
- संचालन – नाभिकीय ऊर्जा निगम (NPC - Nuclear Power Corporation)
- रावतभाटा देश का दूसरा परमाणु स्टेशन है (प्रथम – तारापुर, महाराष्ट्र)
- इसकी कुल उत्पादन क्षमता 1180 मेगावाट

इकाई	उत्पादन
प्रथम इकाई	100 मेगावाट
द्वितीय इकाई	200 मेगावाट
तृतीय इकाई	220 मेगावाट
चतुर्थ इकाई	220 मेगावाट
पंचम इकाई	220 मेगावाट
छठी इकाई	220 मेगावाट
कुल क्षमता	**1180 मेगावाट**

नोट :
- रावतभाटा परमाणु विद्युत गृह में $700\,MW \times 2\,Unit$ प्रस्तावित है।
- राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में परमाणु पॉवर प्रोजेक्ट प्रस्तावित।

Ûft l dhdy mRknu {ker k $700\,MW \times 4\,Unit$ होगी।

- राजस्थान को परमाणु ऊर्जा रावत भाटा व नरौरा (U.P.) से प्राप्त होती है।

2. सौर ऊर्जा

- देश में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक संभावना राजस्थान में है।
- राजस्थान में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक संभावना जोधपुर में है।
- सौर ऊर्जा के राजस्थान में सर्वाधिक संभावना का कारण निम्नलिखित है –

– सौर विकिरण (Solar Radiation) की तीव्रता का अधिक होना।
– सौर दिवसों की संख्या लगभग 325 दिन होना।
– सौर ऊर्जा में निवेशकों द्वारा अधिक निवेश करना।
– मरूस्थलीय विस्तार अधिक होने के कारण तापमान अधिक प्राप्त होता है।

नोट : राजस्थान में नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के आंकलन के अनुसार सौर स्रोतों से 142 गीगावाट सौर ऊर्जा प्राप्त करने की क्षमता है।

सौर ऊर्जा विकास के लिये राजस्थान में किये जा रहे प्रयास –

1. सोलर पार्क निर्माण योजना :–

- इसके लिये राजस्थान में जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकाने को चुना गया है।
- क्लिंटन फाउण्डेशन व राज्य सरकार के मध्य 2010 को हुए समझौते के तहत क्लिंटन फाउण्डेशन सोलर पार्क के विकास हेतु आवश्यक सहायता प्रदान करेगा।
- जोधपुर के भड़ला गाँव में एशिया की सबसे बड़ी सौर पार्क परियोजना प्रस्तावित है।

राजस्थान में स्थापित प्रमुख सोलर पार्क :–

भड़ला (जोधपुर)	धूड़सर – जैसलमेर	नांदिया कलां (जोधपुर)
राज्य सरकार द्वारा	रिलांयस द्वारा	एज्यॉर पावर

राजस्थान में सौलर पार्क के लिए प्रस्तावित प्रमुख परियोजना :

	रिलांयस की परि.	टाटा पावर की परि.	आडानी ग्रुप की परि.
	6000 मेगावाट	2500 मेगावाट	10000 मेगावाट
बजट –	10000 करोड़ रू.	20000 करोड़ रू.	40000 करोड़ रू.

नोट : राजस्थान की प्रथम नीजी सौर परियोजना खींवसर (नागौर) में रिलांयस द्वारा शुरू की गई।

2. सोलर सिटी का निर्माण :–

- जिन सिटी में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक संभावना है उन्हें सोलर सिटी कहा जाता है।
  जिसमें – जयपुर, अजमेर, जोधपुर शामिल है।

3. सौर ऊर्जा मिशन :–

- सौर ऊर्जा विकास के लिए देश में **जवाहरलाल नेहरू नेशलन सोलर मिशन** शुरू किया गया।
- शुरूआत – जनवरी, 2010
- लक्ष्य – 2022 तक 100000 मेगावाट (100 गीगावाट) सौर ऊर्जा उत्पादन।
- यह मिशन तीन चरणों में चलाये जायेगा –

प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण
2010–13	2013–17	2017–22

4. रिसर्जेंट राजस्थान समिट –

- आयोजन – 19–20 नवम्बर, 2015
- स्थान – जयपुर, सीतापुरा
- इस समिट में सर्वाधिक निवेश सौर ऊर्जा क्षेत्र में हुआ।
- जिसमें 9 कम्पनियों द्वारा 1,90000 करोड़ के निवेश समझौते हुए है।
- निवेश कम्पनियों में प्रमुख आडानी, रिलांयस, टाटा, मैसर्स एज्योर, मैसर्स सौलर सन एडिसन है।

5. सौर ऊर्जा नीति –

- नवीनतम सौर ऊर्जा नीति 8 अक्टूबर, 2014 में जारी हुई।
- जिसका लक्ष्य राज्य में – 25000 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन का रखा गया है।
- नवीनतम सौर ऊर्जा नीति के प्रमुख लक्ष्य –
  - – सौर ऊर्जा क्षेत्र में निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण बनाना।
  - – शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के साथ कम आबादी एवं दूरस्थ स्थानों को विद्युत आपूर्ति से जोड़ना।
  - – राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना।
  - – जलवायु परिवर्तन की चुनौतीयों का सामना करने जैसे लक्ष्यों को पूरा करना।

सौर ऊर्जा नीति 2014 के प्रमुख प्रावधान –

1. सरकारी एवं निजी क्षेत्र के अलावा पब्लिक प्राईवेट पार्टनरशिप के तहत सोलर पार्क स्थापित करना।
2. मेगा सोलर पॉवर परियोजनाओं (500 मेगावाट या उससे अधिक) के लिए फास्ट ट्रेक अनुमोदन मुख्य सचिव की अध्यक्षता वाली स्टेट लेवल एम्पावर्ड कमेटी द्वारा किया जायेगा।
3. विकासकर्ता को निजी भूमि पर सोलर पार्क स्थापित करने का प्रावधान।
4. सोलर पार्क उत्पादनों को जिला स्तरीय समिति द्वारा निर्धारित दर पर भूमि का आँवटन करवाना।
5. सौर परियोजना की अमानत राशि 25 लाख रू. से लेकर 10 लाख रू. प्रति मेगावॉट रखी गयी है।
6. सोलर प्रणाली को प्रोत्साहन देने के लिए 2014–15 के बजट में 100 करोड़ रू. का प्रावधान रखा गया।

नोट : SEEZ (Solar Energy Enterprising Zone) - जहाँ सौर ऊर्जा के उत्पादन की सभी परिस्थितिया अनुकूल हो वह क्षेत्र सीज कहलाता है। राजस्थान में सीज क्षेत्र में शामिल – जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर।

3. पवन ऊर्जा

- नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 100 मीटर ऊँचाई पर किये गये अध्ययन के अनुसार राजस्थान में पवन ऊर्जा की उत्पादन क्षमता 18770 मेगावाट है।
- राज्य में पवन ऊर्जा विकास हेतु इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटीरऑलजी ने 26 स्थानों को चिहि्नत किया।
- पवन ऊर्जा में राजस्थान देश में चौथे स्थान पर है। (प्रथम – तमिलनाडु, द्वितीय – महाराष्ट्र, तृतीय – गुजरात)

प्रमुख पवन ऊर्जा संयंत्र :

संयंत्र	स्थान
1. अमर सागर	जैसलमेर (राजस्थान का प्रथम पवन ऊर्जा संयंत्र)
2. सोढा बाँधन	जैसलमेर
3. पोहरा	जैसलमेर
4. आकल	जैसलमेर
5. हन्सुआ	जैसलमेर
6. देवगढ़	प्रतापगढ़
7. फलौदी	जोधपुर
8. हर्ष पर्वत	सीकर

विशेष :

- – निजी क्षेत्र की प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना बड़ा बाग, जैसलमेर में मैसर्स कालानी इंडस्ट्रीज, इंदौर द्वारा स्थापित की गई।
- – राजस्थान का सबसे बड़ा विंडपार्क जैसलमेर में स्थापित किया गया।
- – राज्य में रेलवे का पहला पवन ऊर्जा संयंत्र कोडियासर (फतेहगढ़, जैसलमेर) में लगाया गया।
- – विंड एनर्जी में सर्वाधिक योगदान सुजलोन एनर्जी का है।

4. बायोमास ऊर्जा

- राजस्थान में बायोमास ऊर्जा के प्रमुख स्रोत – सरसों की तूड़ी, विलायती बबूल (जूली फ्लोरा) व चावल की भूसी है।
- बायोमास ऊर्जा की सर्वाधिक संभावना **श्रीगंगानगर** जिले में है।

प्रमुख बायोमास ऊर्जा संयंत्र :

बायोमास संयंत्र	स्थान
1. पदमपुर	श्रीगंगानगर (राजस्थान का प्रथम बायोमास ऊर्जा सयंत्र)
2. खातोली	उनियारा, टोंक
3. रंगपुर	कोटा
4. कोटपूतली	जयपुर
5. चंदेरिया	चित्तौड़गढ
6. संगरिया	हनुमानगढ़
7. कचेला–बागसरी	सांचौर, जालौर

5. बायोगैस ऊर्जा

- बायोगैस ऊर्जा का प्रमुख स्रोत – पशुओं का गोबर।
- बायोगैस ऊर्जा की सर्वाधिक संभावना – उदयपुर

नोट : बायोगैस का रासायनिक संगठन में 65% मिथेन, 30% कार्बन–डाई ऑक्साइड, 2% हाइड्रोजन

6. बायोफ्यूल / बायोडीजल ऊर्जा

- डीजल के रूप में बार्योफ्यूल ईंधन महत्वपूर्ण माना जाता है।
- बायोडीजल का प्रमुख स्रोत रतनजोत (जेट्रोफा) है।
- राजस्थान में बायोडीजल विकास के लिए बायोडीजल रिफाइनरी **कालरावास, उदयपुर** में स्थापित की गयी है।
- राज्य में बायोडीजल प्लांट झामर–कोटड़ा, उदयपुर में स्थापित किया गया।

ऊर्जा विकास के लिए किए जा रहे नवीनतम प्रयास

1. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम (RREC - Rajasthan Renewable Energy Corporation) :

उद्देश्य – राज्य में गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के विकास एवं संरक्षण हेतु प्रयास।

इसकी स्थापना – 9 अगस्त, 2002

अक्षय ऊर्जा निगम की स्थापना REDA एवं RSPCL को मिलाकर की गई है।

* REDA - Rajasthan Energy Development Agency - 1985

* RSPCL - Rajasthan State Power Corporation Ltd - 1995

2. ऊर्जा संबंधित प्रमुख योजनाएँ –

i. उज्जवल डिस्कॉम एश्योरेन्स योजना (उदय / UDAY)

– इस योजना की शुरूआत 20 नवम्बर, 2015 को ऊर्जा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा शुरू की गयी।

– भारत सरकार द्वारा राज्य की विद्युत वितरण कम्पनियों के परिचालन में वित्तीय रूप से दक्षता में सुधार लाने के उद्देश्य से उज्जवल डिस्कॉम एश्योरेन्स योजना को आरम्भ किया गया है।

– इस योजना के तहत भारत सरकार, राज्य सरकार तथा राज्य के प्रत्येक डिस्कॉम के साथ एक त्रिकोणीय समझौते ज्ञापन पर 27 जनवरी, 2016 को हस्ताक्षर किये गये।

– 27 जनवरी, 2016 को किये गये एमओयू के अनुसार ऋण राशि का 75% भार 2 वर्षों के लिए वहन किया जाना है। जिसमें 2015–16 में 50 प्रतिशत भार एवं 2016–17 में 25 प्रतिशत वित्तीय भार वहन किया जाना है।

ii. दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना

इस योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र के लिए प्रमुख योजनाएँ है –

– 3000 से अधिक व 4000 से कम आबादी वाले गांवों के लिए अलग से 3 फेज फीडर लगाना।

– ऊर्जा वितरण प्रणाली का सुदृढ़ीकरण करना।

– दोषपूर्ण फीडर मीटरिंग उपकरणों का प्रतिस्थापन।

– ग्रामीण विद्युतीकरण कार्य राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना को दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना में शामिल कर दिया गया है।

iii. बिजली सबके लिए योजना –

– सभी ग्रामीण घरेलू उपभोक्ता जो कि दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना में शामिल नहीं है, उनके लिए प्रत्येक ग्रामीण उप–खण्ड पर 19 जून, 2016 के बाद प्रत्येक माह के पहले और तीसरे रविवार को विद्युत कनेक्शन उपलब्ध करवाने के लिए शिविर आयोजित किए गए।

iv. मुख्यमंत्री ग्रामीण घरेलू कनेक्शन योजना –

– गैर आबाद क्षेत्र एवं छितरायी हुई ढाणियों में घरेलू उपभोक्ताओं को विद्युत उपलब्ध करवाने हेतु अक्टूबर, 2016 से यह योजना शुरू की गयी।

– इसके प्रथम चरण में नवम्बर, 2016 तक इच्छुक ग्रामीणों से 100 रू. पंजीकरण राशि जमा करके इस योजना में शामिल किया गया।

v. सौभाग्य योजना/बिजली हर घर योजना– 25 सितम्बर 2017

– इस योजना का मुख्य लक्ष्य **31 मार्च, 2019** तक हर गाँव हर शहर के हर घर तक बिजली पहुचाना

– इस योजना के तहत गरीबों को मुफ्त में बिजली कनेक्शन दिये जायेगे।

– इस योजना का बजट 16,320 करोड़ होगा। जिसमे हर घर को 5 एल. ई. डी. बल्ब, 1 पंखा, 1 बैटरी देने की योजना।

3. ऊर्जा संबंधित प्रमुख दिवस –

- 20 अगस्त – राजीव गांधी अक्षय ऊर्जा दिवस
- 14 दिसम्बर – ऊर्जा संरक्षण दिवस
- अर्थ ऑवर डे – पर्यावरण संरक्षण व ऊर्जा बचत का संदेश देने हेतु ऑस्ट्रेलिया से शुरू, जिसमें भारत 2009 में शामिल हुआ। इसके तहत आवश्यक उपकरणों को छोड़कर सभी उपकरण बंद करने की अपील की जाती है। अर्थ ऑवर डे का समय मार्च में किसी भी दिन 8:30PM से 9:30PM रखा जाता है।